



श्री जगजीवन राम और उनके विचार

प्रकाशक  
श्यामजीधरराव अश्विनाम्बुदास ललित,  
नई दिल्ली

१९५५ ई०

मूल्य

१)

मुद्रक  
कॉन्किल प्रस  
नोटीचेर दिल्ली

## क्रम

१ मंगल कामना	ब्रह्मना गान्धी	५
२ मङ्गल कामना	मेविली शरण गुप्त	६
३ श्री जयजीवन राम प्रसस्ति	दत्तात्रेय चण्डुपान करभारकर	७
४ जगजीवन राम	डॉ० राजेन्द्र प्रताप	९
५ राष्ट्र-मुष्म जयजीवन राम	काका ताहुंब कालेत्कर	११
६ व्यक्तित्व		१३
७ परिचय	नारायण लबीबा काजरीकर	१७
८ श्री जयजीवनराम के विचार	इन्द्रनारायण मुन्ने द्वारा संप्रहृत	३३



My heart goes on in  
respectful admiration  
to Jagjivan Ram for his  
having emerged the  
purer gold on of fire.

Mahatma Gandh.

तुम न सक धरती-वन-याम  
अन्य तुम्हारा पावन नाम ।  
सेवर तुम-सा लक्ष लटाम,  
सफल नाम जग-शीवन-राम ।

मैथिलीशरण गुप्त

## श्री जगजीवन राम प्रशस्ति

सदा हामसमायक्तो रामोऽयं जगजीवन  
सदा जनसु मनुक्तो यथा वेदहि जीवन ॥  
सर्वेषु समदृष्टिर्गो निगबित्वाग्जनप्रिय  
सर्वकोरुहितस्वार्थे सत्परागऽस्य निदधय ॥  
अत्यन्नापी महायत्नो मृदुवाक सरल दुःखि  
बहुः प्रवर्षसपत्नो जत्यास्ति हृदय मदु ॥  
इवातु भगवानस्मै वीर्यायुध यथाऽभियम्  
दशकल्पाणकार्येषु भगनाम क्षरवा सत ॥  
इयं माता सुमित्राय भारतीकृमुमगकिता  
दत्तात्रेय सप्रम सादरं च समर्पिता ॥

दत्तात्रेय परशुराम कामाकर  
(वाचिग्य मंत्री आलत तरवार)





# जगजीवन राम

डॉ० राबेन्द्र प्रसाद

तुम्हीसजीवत वर्ष हुए जब मैंने पहले-पहल भी जगजीवनराम से परिचय किया। उस समय वह हास ही में कालेज छोड़कर आये थे और पढ़ने में कुछ सार्वाजनिक सेवा के काम में विलसवशी ले रहें थे। मेरा यह सीमाव्य रहा है कि उनकेकानेक होनहार युवक मुझसे मिला करते हैं और अपने काम और भविष्य के सम्बन्ध में सलाह मिया करते हैं। श्री जगजीवनराम से जब मीका आया था इसी तरह की बातें हुई थीं और मैंने उसी समय बख्त लिया कि वह एक लगन वाले होनहार, काम करने वाले व्यक्ति हैं। उसके बाद वह आहिस्ता-आहिस्ता कांग्रेस के काम में आ जुटे और जब समय आया तो बीरों के साथ जेल-यात्रा भी करते गये। जब १०३७ में देश में पहले-पहल कांग्रेस मन्त्रिमंडल बनाने की बात जमी और महात्मा जी ने यह चर्चा किया कि अगर गवर्नर यह बख्त है कि वह मन्त्रियों की राम में ही सब काम किया करण तब कांग्रेस मन्त्रिमंडल बना सकेगी तब पहले घुड़ में सभी गवर्नरों ने इस तरह का बख्त देना नामजूर कर दिया। इस समय अनेक प्रांतों में कांग्रेस का बहुत बड़ा था। इसलिए कोई मन्त्रिमंडल वैधानिक रीति से जिसको कांग्रेस के सदस्यों का समर्थन न हो बख्त नहीं मचता था। तो श्री गवर्नरमंड की नीति के अनुसार गवर्नरों ने प्रयत्न किया कि मंत्री जगहों में किसी न किसी तरह मन्त्रिमंडल बन जाय। ऐसा ही प्रयत्न बिहार में भी किया गया और कुछ दिनों के लिए श्री युनिवर्स मन्त्रिमंडल बनाया। उस समय भी जगजीवनराम वहाँ की कांग्रेसवा के एक सदस्य चुने गये थे और श्री युनिवर्स ने इस बात का बहुत प्रयत्न किया कि उनका किसी तरह से पीड़ा करके अपने मन्त्रिमंडल में ले लें और उनका साथ जो हरिवन्त सदस्य थे उनको महात्मा का प्राप्त कर लें। पर श्रीजगजीवनराम न एक बारभी इस चीज को नामजूर कर दिया और उनका दिये हुए मंत्री पद को ठुकरा दिया। यह बात मुझको मालूम हो गई और मैंने उसी समय महात्मा गांधी को इस बात की सूचना दी थी जिससे वह बहुत प्रसन्न हुए थे और जिसका जहाँ तक मुझे स्मरण है उन्होंने अपने किसी सैस में भी जिक्र किया था। इस घटना के बाद जो मरी घट्टा और प्रेम श्री जगजीवन राम के प्रति था वह और भी बढ़ गया और मन बैल लिया कि वह समय बाने और काम करने वाले ही नहीं हैं पर समय पर त्याग करने में भी किसी न पीछे नहीं रहेंगे। उनके बाद वह जहाँ तक मुझे स्मरण है बिहार प्रांतीय कांग्रेस कमटी की कार्यकारिणी में चलीक हुए और जब कुछ दिनों के बाद वापस न मन्त्रिमंडल बनाया तो उनको पालिया-



# जगजीवन राम

डॉ० राजेश प्रसाद

सुप्रीस-जीस वर्ष हुए जब मैंने पहले-पहल भी जगजीवनराम से परिचय किया। उस समय वह हाल ही में जालेज छोड़कर आये थे और पठने में कुछ सार्वजनिक सेवा के काम में दिलचस्पी ले रहे थे। मेरा यह सीमात्मक रहा है कि अनेकानेक होनहार युवक मुझसे मित्रा कर रहे हैं और अपने काम और मजिप्य के सम्बन्ध में सलाह लिया करते हैं। श्री जगजीवनराम से जब मीठा खाया या इसी तरह की बात हुई थी और मैंने उसी समय दख लिया कि वह एक कगल वाले होनहार काम करने वाले व्यक्ति हैं। उसके बाद वह आहिस्ता-आहिस्ता कांग्रेस के काम में आ जुटे और जब समय आया तो औरों के साथ जल-यात्रा भी कर ली। जब १९३७ में देश में पहले-पहल कांग्रेस मजि-मंडल बनाने की बात चली और महात्मा जी ने यह बात कगई कि अगर गवर्नर यह बचन दे दे कि वह मजि-मंडल की राय से ही सब काम किया करे तो कांग्रेस मजि-मंडल बना सकेगी तब पहले शुरू में सभी गवर्नरों ने इस तरह का बचन देना नाममूर कर दिया। इस समय अनेक प्राप्ति में कांग्रेस का बचन था। इसलिए कोई मजि-मंडल वैधानिक रीति से जिसको कांग्रेस के सदस्यों का समर्थन न हो वह नहीं बनना था। तो भी गवर्नर की नीति के अनुसार गवर्नरों ने प्रयत्न किया कि सभी जगहा में किसी न किसी तरह मजि-मंडल बन जाये। ऐसा ही प्रयत्न बिहार में भी किया गया और कुछ दिनों के लिए भी मुनिम न मजि-मंडल बनाया। उस समय भी जगजीवनराम जहाँ की आरामशा के एक सदस्य चुने गए थे और भी मुनिम न इस बात का बहुत प्रयत्न किया कि उनका किसी तरह से पीछे करके अपने मजि-मंडल में ले लें और उनके साथ जो हरिजन सदस्य थे उनकी सहायता वह प्राप्त कर लें। पर श्रीजगजीवनराम न एक बारभी इस चीज को नाममूर कर दिया और उनके चिये हुए अपनी पद को टुकरा दिया। वह बात मुझको मालूम हो गई और मैंने उसी समय महात्मा गांधी को इस बात की सूचना दी थी जिसने वह बहुत प्रसन्न हुए थे और जिसका जहाँ तक मैं स्मरण है उन्होंने अपने किसी सेम में भी जिक्र किया था। इन बातों के बाद जो गरी पड़ा और प्रेम श्री जगजीवनराम के प्रति था वह और भी बढ़ गया और मैंने दख लिया कि वह कगल वाले और काम करने वाले ही नहीं हैं पर समय पर त्याग करने में भी किसी से पीछे नहीं रहेंगे। उनके बाद वह जहाँ तक मुझे स्मरण है बिहार प्रांतीय कांग्रेस कमेटी की रा-कारिणी में घरीक हुए और जब कुछ दिनों के बाद कांग्रेस ने मजि-मंडल बनाया तो उनको पाम्पि-

भट्टरी मेक्सेन्टी के घर पर नियुक्त किया गया। उस घर पर रहकर उन्होंने अपनी जवाबदेही और काम को कुछ अच्छी तरह से संभाला जिसकी प्रशंसा उस समय के सभी लोग किया करते थे। उनका मुख्य कार्यस और कार्य-कार्य्यों के साथ दिन प्रतिदिन अधिक घनिष्ठ होता गया और १९४१ में फिर वा महारवा जी का महान् आन्दोलन शुरू हुआ उसमें उन्होंने यथोचित भाग लिया। १९४६ में जब केन्द्रीय मंत्रिमंडल में कायम न खरीक होने का निश्चय किया तो उसमें स्वाभावतः खयाल उनकी ओर गया और उनको स्थान मिला। अबस्था उनकी कम थी। तो भी धन विभाग उन्होंने अच्छी तरह सुधी के साथ संभाला। पिछले पांच वर्षों में वह इस विभाग के मंत्री रहे हैं और इस पर न उन्होंने जगजीवियों की स्थिति को सुधारने के लिए वा काम किया है वह कबल भारत सरकार की कानून की किताबों में दर्ज कानूनों में ही माफूम नहीं होता पर जिस तरह उनकी अबस्था सुधरी है वह वलने में ही उसका पना पूरी तरह से चल सकता है। अनुभव काफी उगहन इन बीच में प्राप्त कर लिया है और अपने विषय में उन्होंने लच्छा अधिवार प्राप्त कर लिया है। नारा जीवन है। काम करने की लगन है धन से नहीं लगे और जो ठीक समझत है उनका कहन और करने में नहीं हिचकते। जब कोई नीय सामने आती है तो उन पर हर पहलू से विचार करके ही कोई राय कायम करते हैं और विचार निश्चित कर लेन पर पकड़ उसमें डिपने नहीं। येरा उनमें सम्पर्क और अधिक निम्न प्रतिदिन घनिष्ठ होता गया और और मैं जाया रगठा है कि उनका नविष्य और अधिक उज्ज्वल होगा। अभी उनकी अबस्था कम ही रही वा सकरी है और इसलिए काम वा लाभ और काम करने का समय और धनिकी भी उनके सामने बहुत है। और हमारी यही नदुभावना और भविष्यता है कि वह समय और धनिकी को देव की नवा में उभो लम्परना में लगायेंगे जिम लम्परना स उन्होंने आज तक काम किया है और अपने काम में मकम होने लगे हैं।

# राष्ट्र पुरुष जगजीवन राम

श्री कान्ता साहेब कालेकर

हमारे देश में उपेक्षित जातियों का सवाल अत्यन्त पुराना है । इस सवाल का हल करने की कोशिश प्राचीन काल से होती आई है । विद्वामित्र और श्री रामचन्द्र जी के समय से कोशिशें होती आई हैं । पञ्चतन्त्र और कथा सरित्-सागर जैसी कथाओं में भी ग्रीस आदि अनेक विषय जातियों का जिक्र आता है । इन लोगों की ईश्वरनिष्ठा, भूमि निष्ठा और स्वामिनिष्ठा उल्लेखनीय की जाई गई है । अन्तों ने इनके बीच हमेशा काम किया है और इन जातियों में अच्छे-अच्छे सन्त भी पैदा हुए हैं । वहाँ-वहाँ विद्वान के द्वारा भूमिनिष्ठा सिद्ध करने के अवसर पैदा हुए, वहाँ-वहाँ इन जातियों का पीरव मुक्त उल्लेख आया ही है ।

इतना होते हुए भी ये सब जातियाँ देश के विराट समाज में घुँरी-घुँरी बुल-मिल गई हैं । इनकी विषय-संस्कृति की रक्षा के उद्देश्य से और उपेक्षा के कारण भी इनको हमेशा दूर ही रखा गया । सामाजिक बहनों ( *Prejudices* ) के कारण इन जातियों के प्रति बहुत अन्याय हुआ है ।

ऐसे अन्यायों का परिमार्जन करना और इन जातियों के विकास में विघ्नरूप जो कठिनाइयाँ हैं उन्हें दूर करना और इन्हें पुनर्तथा अपनाया आज का युगवाम है ।

भारतीयों की सामाजिक कमजोरियों को बराबर और गुरस्त पहचानने वाले और उससे साम उठाने वाले अंग्रेजों ने हमें बताया कि सामाजिक अन्याय दूर करने का काम आहिस्ता-आहिस्ता नहीं हो सकता । अच्छे बर की आग बुझाने का काम सवास बर्ष की योजना बनाकर हम नहीं कर सकते । वैष्णवों ने बीड़ों में और बौद्धों ने दून लोवों में बीच जो काय किया था वही दूसरे ढंग और दूसरे उद्देश्य में इस्लाम में और ईसाई धर्म में भी कर देना ।

आज के युग में बड़े कार्य हम लोग सामाजिक वैधानिक आर्थिक और राज-सिक्त क्षेत्र में कर रहे हैं ।

हमारे काम सबसे अच्छा हमसिद्ध विज्ञा जाता है कि उनके अर्थ में हम उपेक्षित जातियों में खोटा कौटि के अन्त पैदा हुए । हमारा नया युग का कार्य भी तभी अच्छा बिना पायसा जब इन उपेक्षित जातियों में से हमारे देश का समाज बनाने वाले नेता पैदा होंगे । इतना ही नहीं बिगुन समस्त मानव जाति के बख्शाण के लिए अपनी आयु अर्पण करेंगे ।

आजकल उपेक्षित जातियों में का तरह के नेता पैदा होते हैं, और मैं मानता हूँ

दोनों के लिए योग्य कारण भी है और दोनों की उपयोगिता भी है। लेकिन दोनों की कोटि भिन्न है।

जिस कड़ि के कारण और गहक सामाजिक आदर्श के कारण इन उपेक्षितों के प्रति अग्याय होता रहा उस कड़ि के निराफ और उसके समर्थकों के निराफ मद्देन का काम ग्यायनिष्ठ गुहारक सबकों का भी है और उपेक्षित जातियों के स्वाभाविक नेताओं का भी है। ऐसे लोग कहते-सकते इसने कड़बे बन जाते हैं कि मनुष्य जाति पर उनका विश्वास ही गल्ट हो जाता है। सबकों के साथ सहना चाहिए, उनको परास्त करना चाहिए। उनके हाथों ग्याय मिलने की आशा कभी भी नहीं इतनी चाहिए। बर्रा बर्रा अधिनार हो अपनी जाति का प्रतिनिधित्व होना चाहिए। किसी पर भी अग्याय करना बहकपी है। बुनियात सब लोग अपने स्वाध की ही बात सोचते हैं। हमें भी बर्मा हो करना चाहिए। अपनी जाति का मण्डन करके और जातियों से सहते रहना क्या भी उदात्ता बरी दिखाना और हमेशा जागरक रहना यही हमारा कर्तव्य है। य ई लम लोग की जीवन दृष्टि।

दुम्ने काम होत है या रहते हैं कि कड़बारी तब बिल धीयों की स्वार्थवृत्ति हम जानत हैं। अपने अधिनार की रता के लिए तेने लोकों हैं सहना चाहिए यह भी हमें मंजर है। लेकिन हम जानत हैं कि नारा ममात्र ऐसे लोग का बना हुआ नहीं है। सबकों ग और सब बर्ष व लोग में तेम भी लोग हैं जो हमारे प्रति श्वास करने के लिए औरों से सहत रहत हैं। उसमें लम्बानिष्ठा है उदात्ता है। स्वार्थ को भूमकर दूसरों के हित के लिए व हमारा बोधित करते रहते हैं। परन्तु अधिनार के कारण राष्ट्रीय संमन्त्र जगत बमबार हुआ तो सबका माध होने वाला है। इसलिए अपने और अपनी जाति के स्वाध की लम्बा रहकर अथ बन जाना अधिनार का बापुमंडल बढ़ाना और राष्ट्रीय लम्बा रहकर व दम्बा राष्ट्रवाद हावा। जिस लोग ने उपेक्षितों की ओर देगा उनकी सेवा व हित धनना स्वार्थ छोड दिया और परदेवार में ही जीवन की मकलता पाई लम लोग का ही अनुकरण हम क्या न करे? हमग भी अधिन उपेक्षित और अधिक दुर्बल जनता नहीं न नहीं जरूर होवी उनकी सेवा का हम क्यों न मोध? और मुनरान के अग्याय का ध्यान घरा न बरकर अधिन्य बाल के लिए सर्वनेवा का आगा हम क्या न करत बने? आर राष्ट्र के हित के लिए प्रयत्न करने करना और अपनी जाति का जो कुछ भी श्वास मय जाए उसी से संताप क्यों न धारें? मनुष्य जाति व रिताम का बिम्बन कर्म बाल अधिन्यनिष्ठ लोगों की जमान में हम क्या न तरीक हा जाव? यह है दुम्ने बिम्ब के लोग की जीवन दृष्टि।

मेम देत लिया है कि मानसोप भी जगजीवन राम दुम्ने कोटि के राष्ट्रगुरुप हैं। इनीमिद घरे जैसे अजर लोगो के मन में उनके प्रति आदर है। और इनीमिद हम उनका अधिन्यन करने प्रयुक्त हुए हैं। ईस्वर उर हीर्षाय और आरोग्य दे। और हमरा अनुकरण करने वाले लोग की संख्या बढ़नी देलम का परम मनीष इम्ह प्राप्त हा।

## व्यक्तित्व

जिस चेहरे पर जंगली फूल के निर्मल नैसर्गिक मोलेपन से भरे हुए सौन्दर्य की शमन है प्रामीनों की सिबाई है और दुनिया की रंगीन जातियों को कष्ट साधना की मानवीय कक्षा प्रतिबिम्बित होती है वह हमारे देश के राष्ट्रीय जागरण के युग में पैदा होने वाले असाधारण व्यक्तित्व का चेहरा है। उसकी सिबाई, धोखेपन और मानवीय कक्षा के बीच हो पड़ी दृष्टिमें असाधारण योग्यता का प्रतीक है जिस रंगीन जातियों के चेहरे में उनकी भाषों की भाषा ही उनकी योग्यता का बखान करती है ठीक वैसी ही इस चेहरे की विशेषता है। व्यक्तित्व में चेहरा और भाषें ही व्यक्तित्व के युगों को उजागर करते हैं।

जगजीवनराम का व्यक्तित्व उनके चेहरे में बोलता है। उनकी मित्रवत्ता उनकी सिबाई और ईमानदारी और सबसे बड़ी उनकी इम्मान परम्परा—सभी उनके चेहरे की रेखाओं में निपिबद्ध है। इस व्यक्तित्व की कुछ शक्तियाँ दक्षिण फिर चेहरे की रेखाओं से मिलाइए

\* \* \*

बिहार का एक गाँव। छ-सात साल का बबोज बाबू हाथ में डंडा लिए ऊँचे से पेड़ की चोटी पर मुँह कुलाए बैठा है। वह सोच रहा है 'मुझे गुब जी ने निरपराध क्यों पीटा? मैं अब इस पाठशाळा में नहीं पढ़ूँगा। ऐसी पाठशाळा में जा भी मुझे पढ़ने के लिए कहेया उनकी इसी डंडे से मरम्मत करेगा।

\* \* \*

हार्द स्कूल में बालिक होने का प्रार्थी एक बहुत छान। मास्टर कहता है 'वर जास्त हो बहुत होने के माँ गुम्हारे फीम माफ हो जायगी। किन्तु वह दरगास्त नहीं बैठा है बल्कि परीक्षा में अपनी असाधारण योग्यता दिखाकर फीम माफ कराता है।

\* \* \*

बचप की जल-मेला का जाक्रमण। गारा गाँव जलमय है। मेरी बाड़ी उब गयी है जलभर बहे जा रहे हैं और जिम्हारी के बनेरे परों की बीबारें भी बिबलिन होकर जमीन जून रही हैं। पन्द्रह साल का एक लड़का रात में जल मेला के हम आचमण से अचने पर के सामान की रखा कर रहा है। जमने सब सामान बचा लिया किन्तु अचने मारि के मेट किए हुए ५० २० तो अभी जमीन में ही बचे थे। वह अचिमम्पु की तरह जल के जलम्पुह में कूद कर अपनी हम प्रिय बेट को बिकाम लाया। देखने वाले बच है।



कमल के हुई स्कल का बापिकोलम । दक्षिणामूर्ती धर्म का बातावरण । हिन्दू धर्म के नेता मातृधीय जी पचार हैं । सर्वत्र स्थापितमान सं पूरे नहीं समा रहे हैं और दक्षिण जाति के लोग एक हीन भावना से इस गौरव भण्डित धर्म को देख रहे हैं कि एक बड़प्पन छात्र ने जो प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण हुआ था एक भावपूर्ण लेख पढ़कर मुनामा । लोग चाँकि कि मातृधीय जी ने उसे अपने बचपन में बैठा लिखा है । मातृ के सर्वत्र हम होंगहार बड़प्पन की प्रतिभा न चकित्र होकर उसकी माँ से कहने हैं । 'होंगहार बड़प्पन अधम शीतो दिन बड़ा आवसी बगिहन । एतिमा लरिका ओहिमा सहस्रन स बाकी शीतो के मातृधीय जी अपना मेरो बोला के न बेटोन्म होंगहार बड़प्पन के अपना पान बोला के बैठा लैलन । माँ बहुत मुनकर हर्ष ने फूली न नमाई ।

\* \* \*

सन् १९४७ की छेज वर्षी । बमरा के आलपल्ल का बाप-मा तपाटा हुआ देनि स्नात । आत्मानामूर्ती के उल्लापन की तरफ ध्यान हुआ । अधीन पर वर-वर्षे बड़ी की गति गिरा हुआ हवाई जहाज रात का बाप-माय करता हुआ मन्नाटा । और हम बीहड़ निर्जनता में बड़ हुण बावत हवाई वाली जिनमें अन्तर्राष्ट्रीय-धर्म सम्मेलन का भार तीव्र प्रतिनिधि मण्डल का नेता भी पडा करार रहा है । दुनिया में तार लटक गए । भारत में भागा-निराशा का हुल्ल मच गया । क्योंकि वह अम्लिन भारत के धर्म मन्त्री प्रबन्धीन राम ही थे—जो इम्मानियन और ईश्वर में बनकर विश्वास के बारम्ब मोल पर भी बिजय प्राप्त कर सक । हग पुनर्वन्ध ने उनकी माँ के बात्मन्म को बीरव सामी बनाने वाले अम्लिन की रदा की—इने वह और इनकी परम आस्तिक माँ ईश्वर का बमन्कार ही मानने हैं । है भी बमन्कार ।

अम्लिन की से गल आकिया उनके बहुरे की रेखाओं में लाकार हो उठनी है । उन स्थापितमानो बापक की माँ की जो बैठ की चीनी पर डंडा लेकर बैठा था और जिसमें बड़प्पन हाव के माने कीव माफ करण की दवा की भीन नहीं माँगी उस मातृनी बापक की निर्भीकता का बमन्कार बाइ में भी प्रेम की भेंट की रत्ना के निम्न बड़ पडा और उस प्रतिभाशाली छात्र की मातृपता जिसमें मातृधीय जी प्रभावित हुए थे—इम बँहरे में ममा बिचगिन हाकर मन्त्री हो उठे हैं ।

अने छाने न बगानी जीवन में लेकर जेनेवा के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन तक और मुनिमिन्म बोर्ड के मन्त्र्य न मातृनीय बाइ ममा की लक्ष्यता की पीटिकाओं की बार बरने हुए भारत न धर्म और मन्त्र्य मण्डल तक उनका जीवन का विराग एक रचनात्मक बलिदान की बा बिबाग है । राष्ट्रीय स्वाधीनता के संझान में एक निराली दक्षिण जाति ने गल बिरोधी लता और भारतीय संस्कृति में अने बिद्वान रचन बने मन्त्र्यता शीतो और मन्त्र्य के पयपामी के मन में वह राष्ट्रीय जीवन की बलिदान रचना के धमकावट आकिया है ।

उन्होंने सबको के व्यापारों से पीड़ित जातिओं का पक्ष लेकर सभी सामिक प्रतिष्ठिया का परिचय नहीं दिया और न कभी जातीय समुदाय की भावना में उन प्रतिष्ठियावादी ताकतों का साथ दिया जो भारत के स्वाधीनता आंदोलन के विरुद्ध जाति-पीड़न के नाम पर एक बल-संचयन पैदा करना चाहती थी और पांडो जी के इरिजन् आन्दोलन का विरोध करती थी। इन प्रकार उन्होंने पीड़ित जातिओं के दुर्भाग्य के उद्धार को मान सोचते हुए भी और सबको की आलोचना करते हुए भी कभी साम्राज्यवादियों का साथ नहीं दिया। बल्कि साम्राज्य के समर्थकों की ओर से कालजय देने पर उन्होंने एक बेरामन्त्र स्वाधिमानी को तरल कहा 'ये बेरामन्त्र नहीं बनना चाहता।

इसके साथ ही उन्होंने मरा वस्तुओं और मोपितों का पक्ष लिया और उनकी दुर्भाग्य के सही सामाजिक और आर्थिक कारणों को समझा। उन्होंने कहा

'यदि हिन्दू समाज के डोने के मन्तगत आधुनिक रीतियों या अन्य इरिजन् नीचे समझे जाते हैं तो वह उनका अपना दोष नहीं बल्कि ऊँची जाति जाति का दोष है। यह एक सामाजिक व्याधि है।

'मगिनों की मुक्ति हमें है कि एने समाज का निर्माण किया जाय जिसमें कि कोई महत्तर न हो।

'आर्थिक कारणों से सामाजिक डाका टूटता जा रहा है और उच्च जाति के लोगो ने नार्ड बोधी तथा पांडो के पैसे तक को सम्हालना शुरू कर दिया है किन्तु उनमें से किसी ने भगो का पैसा अपनाते का मार्ग नहीं किया।

'अस्पृश्यता की समस्या आर्थिक है इसलिए उस उमी विषय दृष्टिकोण से मुक्तमाना चाहिए।

इन प्रकार सबको के आर्थिक कमावाल से पीड़ित जाति में ब्रह्म रूप बान्वा बाव की गुहड़ी का एक नाम आबाव भारत का पहला धर्म मन्त्री बना परचान् संचार मंत्री।

अमरीजनराम के व्यक्तित्व की ये आक्रिया बलकर भारत के उन मजों के व्यक्तित्व की तस्वीर मायमे लाचने लगती है जिन्होंने हमिन जातिओं के अधून-मम में ब्रह्म लेकर भी भारत की संस्कृति और साहित्य का मन्तृ किया। और जिनके इतिवृत्त के हिमालय जैसे पौरव के मायम सबको का मिथ्यामिमान धीना-या प्रतीत होता है। इन मनों ने अपनी लाक मगल की मानववादी कामना से साहित्य और संस्कृति के क्षेत्र में जो निमात्रकारी काम किया वही काम जो अमरीजनराम ने भारत के बलमान राष्ट्रीय जागरण के राजनीतिक क्षेत्र में किया और जैसे व लोग अपने गुह-कर्म-स्वभाव की योग्यता से अलग होने पर भी मन्त्र और सब को के लिए पूर्य बन गये थे उमी प्रकार अपना व्यक्तित्व भी लक्षप्रिय बन गया।

यह इसलिए नहीं कि अपनी राजनीतिक उपलब्धता अधिक है बल्कि इन

लिए कि आप एक बड़े इम्मान हैं। इम्मानियत के बढ़पन की ये सफरताएँ बाहरी रूप हैं— जो किसी क्षण मिट सकती हैं और बरक सफरी हैं। किन्तु आधमी की आश्मियत उनके मरने के बाद भी अमिट रहती है। आधमी सफरताओं से बड़ा होता है। जो आधमी सफरताओं के गिरावट पर बैठकर आश्मियत की सार्वभौम नहीं से नीचे गिर जाता है वह सफरताओं से बड़ा और अमरताओं से छोटा बनता है। किन्तु जगजीवनराम का व्यक्तिगत उन आश्मियत की कटौती है जो सफरताओं के गिरावट पर बैठकर भी इम्मानियत की सार्वभौम नहीं से नीचे नहीं गिरता जब भी उसे ऐसा धर्म-संकट दिखाई दिया उसने सफरताओं के गिरावट को त्याग दिया किन्तु फिर भी वह एक बड़ा आधमी बना रहा क्योंकि उसने अपने में जीवित रहने वाले इम्मान की सेवा जारी रखी। उनका कहना है 'मेरी मिल्के मनुष्य धर्म के मुझे बर गिराना करता है। इसीलिए वह व्यक्ति के मुखार में बिनाम रहता है और उनका नृप है। वैयक्तिक मुखार गोपी बार का बार है।'

बनपता की चिन्ता ही व्यक्ति को चिन्ता है। राजनैतिक स्वाधीनता के इस युग में अनेक नया बनपता की स्वाधीनता की चिन्ता से युक्त ही नए-नए प्रयोग होते हैं और राष्ट्रीय आन्दोलन के उन्धान में उन्हीन जिम जात का परिचय दिया का उसे आज का युग है किन्तु आज का युग भी यह सोचने है

'आ आधमी आज हमारे पास है उन हम हमारी आधमी नहीं वह सबसे बड़ा वह केवल राजनैतिक आधमी है। जनता के लिए वह कोई अर्थ नहीं रखती। जब तक कि उनके हित-सहित के स्तर की ऊपर नहीं उठता जाता उसकी सारी उचित योजना बरक तथा मरान की समस्याओं को हल नहीं किया जाता जब तक कि लोग अन्धधारा तथा अन्धधारा चाहे किसी भी स्वरूप में हैं। मुनियत की वस्तुएँ नहीं बन जाते और जब तक कि उन सब तरह की उन्नति के लिए सभी आधमिक अवसर नहीं मिल जाते तब तक वह आधमी उन्नति लिए किसी काम की नहीं।'

जगती कला की पीछ किसी मुनियत काव में नहीं छोड़ी जाती। वे बड़ी की पल बर हल बाजाररक का अन्त पराय में मुनियत बर देने हैं। यह व्यक्तिगत भी एक दमिद जाति में पाना और आज जगती मुनियत का बाकी की मुनियत बराबियों का भी अन्तियन बर रहा है।

## श्री जगजीवन राम

कुछ लोग ऐसे ही होते हैं जिन्हें देखते ही लगता है जैसे मातृभूमि के सच्चे प्रतिनिधि पुत्र हैं। उनके व्यक्तित्व में भरती की विराटता बड़े यथार्थ रूप में उभर आती होती है। बड़े केवल उस भरती के पुत्र नहीं होते जो पापान और भूमि से बनी है, बल्कि उस समुद्ररा की कोल की उपज होते हैं जो रत्नमयी हैं और सर्वसह्य हैं।

श्री जगजीवनराम का व्यक्तित्व भी देखकर अचर्यबोध के उस पृथ्वी-पुत्र की कल्पना साधारण हो उठती है जो कहता है भूमि मेरे मां हैं मैं पृथ्वी का पुत्र हूँ। ऐसे पृथ्वी-पुत्र राष्ट्रीय जीवन में कल्पवृक्ष के समर फल होते हैं जो अपने अमृत दान से राष्ट्र को भी समरता प्रदान करते हैं।

राष्ट्र की आत्मा जन है भूमि उसका शरीर है और संस्कृति उसका शृंगार होती है। राष्ट्र का आत्मरूप जन ही भूमि की विराटता और संस्कृति का शृंगार पाकर असाधारण व्यक्तित्व बन जाता है। राष्ट्र में जन बहुत होते हैं किन्तु राष्ट्र की आत्मा की विराट अभिव्यक्ति जिसके जीवन में मुकुरित हो पाती है वे बिरले ही होते हैं। राष्ट्रीय जीवन के कल्प-वृक्ष पर कभी-कभी ऐसी बहार आती है जब उसमें असाधारण व्यक्तियों के समर फल बहुकुरित पुष्पित और फलित होते हैं। भारत में राष्ट्रीय आत्मरूप एक बसन्त ऋतु की जिसमें ऐसे समर फलों की सृष्टि हुई। श्री जगजीवनराम उन्हीं में से एक हैं।

आप राष्ट्रीय आत्मरूप काल में गांधी जी की बट-बूझ की छाया में पनपने वाले व्यक्ति बातियों की जनचेतना के सर्वाधिक लोकप्रिय नेता हैं। जिस तरह डॉ. राजेन्द्रप्रसाद का व्यक्तित्व भारत के ठेठ किसान का-सा व्यक्तित्व है उसी प्रकार श्री जगजीवनराम भी ग्राम-देवता की विभूति हैं। यदि किसी को बताया न जाए और साधारण श्रेष्ठ-भूषा में जगजीवनराम की कोई बिबेदी अपरिचित दखें तो उन्हें वह भारत का सीधा-साधा किसान समझेगा।

मादगी आपके जीवन का शृंगार है। उनकी खासी की भारतीय पोषाक में पैरान का चमत्कार नहीं होगा है। क्योंकि राजनीतिक क्षेत्र में जीवन बितान वाले लोगों पर—जहाँ दुनिया के नये मिश्रणों का प्रभाव गीघ पड़ता है वहाँ बाह्याङ्गम्यों के चमत्कार का प्रभाव भी मूल पड़ता है किन्तु श्री जगजीवनराम अन्तर और बाह्य मरम आङ्गमरहीन भारतीय ग्राम-संस्कृति के प्रतीक हैं और मरमता और मादगी सदा मन्त्रा और मानवारी की प्रतीक होती है। जिस तरह महात्मा गांधी ने अहिंसा और सत्य के मिश्रणों ने राजनीति का नैतिक और मानवीय मन्त्री और ईमानदार बनाने

का आदर्श प्रस्तुत किया उसी तरह इस आदर्श की प्राप्ति के लिए व्यक्ति के अपने जीवन में भी अन्दर और बाहर—दोनों में—सम्बन्ध और ईमानदारी को प्रतिबिम्बित करने की प्रेरणा दी। साथ ही यह महान नैतिक धेरवा जिन राजनीतिक व्यक्तियों में प्रतिक्रिया हुई उनमें श्री जगजीवनराम का व्यक्तित्व एक महत्व रखता है।

विहार प्रान्त के आरा जिले के एक छोटे गाँव में रहित जाति की घोर में जन्म लेकर श्री अपने कर्म-जगत् की तमाम विपन्नताग्रस्त बाबाओं को पार करते हुए मार्गजिन जीवन का रास्ता तय किया। रहित जाति के तमाम दुःख-दर्शों को जानते हुए और उनके तपस्व ब्राह्मणों के प्रति एक विश्रुति रखते हुए श्री आप राष्ट्रीयता के देश-भक्तिपूर्ण बम में सभी विचलित नहीं हुए बल्कि आपने प्रतिक्रियाकारी शक्तियों से संघर्ष किया और रहित जातियों में राष्ट्रीयता की जागृता भरकर उन्हें उन्नत बनने एवं अपने अधिकारी को प्राप्त करने की प्रेरणा दी। प्रतिक्रियाकारी ताकत रहित जातियों के अधिकारों की सहाई को राष्ट्रीय स्वाधीनता संघर्ष में अग्रज बनाती रही। वे भारतीय स्वाधीनता संग्राम की मजबूत का आन्दोलन बनाकर इन लोचों लोचों को सुमराह करती थी। किन्तु श्री जगजीवनराम ने रहितों के अधिकारों की समस्या को एक राष्ट्रीय समस्या समझा और इसका निदान राष्ट्रीय समस्या का निदान माना। इसीलिए आप प्रतिक्रिया-वादियों के आत्म में न आकर और आक्रामकवादियों के तमाम आचरण ठगकर कर जगतामा गाँव के तप-पूर्ण मार्ग पर आग बढ़ने रहे।

मूलतः जगजीवन राम का परिवार आरा जिले का रहने वाला नहीं। इनके दादा श्री चिन्मयरायण आज में लगभग ० साल पहले मर चुके हैं। मुन्नाजी राम की छोड़ इस आरा जिले के मोतीजीराय गाँव में आकर बस गए थे। वहाँ-पर जगजीवन राम का पिता श्री गान्धीराम का जन्म हुआ। परिवार के सब लोग आपको बाबू जी कहने थे। इस लड़के के नाम के कुछ कारण आप ही हैं।

बाबू जी के पिता जी का देहान्त इनके बचपन में ही हुआ था। इनकी मीनेली है। बूढ़ा बाबा है। इनके एक बड़ा बेटा में मौकुर थे। नाम मान की आदु में आप जाने क्या के साथ मुन्नाजी राम। बड़ी छत्र हुए ही आपने जिन्दी एवं अवेजी का मान प्राप्त किया। छोटा-मोटा काम भी करन छत्र थे। बाद में आपकी सेवा में ही एक मोहरटी मिल गई। जिस परमेश्वर का साथ आप काम करने थे वह बाबापुर (बगमा) का बई और राम भी उनके साथ बानसपुर आ गए। मरन मान जगन्मान में रहने थे बाद जब आप जल्दी बार आली बानी (इम्फाल ही इनको माना का प्यार और रमह दिया था) में देनने गए सब आपने पहली छट में आली बगमाई का साथ मणिल राया बानी के आचल में रन दिया। शोध-जगन्मा बानी की आंग प्रम और स्नेह में बचप उठी। उनको खुश रहता है उनमें कुछ का उछारक एक तारक पीन सामने गया है। इनका हर्ष और आनन्द हृदय में नहीं मधायी और वह आनन्द के रास्ते बह उठा और पितृवही बचन बाबू जी भी उनमें आचल हो गए।

'बाबू जी' १४ साल के हो गये थे। फिर नमाने भी लगे थे। दादी की बहु रिश्ते की इच्छा अत्यन्त प्रबल थी। उस फिर क्या था। बसमा नरमदा गाँव के एक स्वराष्ट्रीय कन्या 'वासन्ती' से आपका बिवाह निश्चित हुआ और साफ बीसते भागका बिवाह भी हो गया। वासन्ती की उम्र उस साल की थी। तेमा की मीकरी जमी बारी थी। परन्तु यह और पाँच साल से अधिक नहीं लगी। आप स्वभाव के मानी न। सैनिक अफसर न। आपकी जिन्दी बात पर बिगड़ गई। आप अपने को निर्दोष मानते थे और इस कारण मायी माँगने से इस्कार कर दिया और मीकरी छोड़ दी। स्वभाव की यह त्रिस्तुति आपके परिवार में बमबाँध है। मीकरी छोड़कर आप चढ़वा गाँव जा गए। यहाँ आपकी पहली सन्तान का जन्म हुआ। बच्चे का नाम सन्तुका रखा गया। 'बाबू जी' का इरादा बलिगाँव में अपना घर बनाकर बसने का हुआ। बहाँ मकान बना लिया गया किन्तु सन्तुका वहीं जाकर बीमार हो गए। यद्यपि आपके चचेरे भाई बलिगाँव में ही रहते थे और आपने भी अपने लिए बहाँ घर बनवा लिया था किन्तु पहली सन्तान का बहाँ जाकर बीमार होना अच्छा नहीं माना गया और इसको अपमकून समझा इसके अतिरिक्त छहरे से दूर होने के कारण बहाँ डॉक्टर और ईश की भी मुविधा समय पर न हो सकी थी। आप पुन चढ़वा गाँव जा गए। बहाँ आपने एक और घर बनवाया। यह घर हम कुटुम्ब का स्थायी घर हो गया।

बहुत दिन आपको बेकार नहीं रहना पड़ा। कलकत्ते में आपको एक स्वाभ मिल गया। यहाँ की कमाई ने खेती के लिए गाँव में जमीन खरीदी। इसके कारण परिवार की आर्थिक अवस्था सुधर गयी। 'बाबू जी' की गुरदायिता एवं प्रबन्ध-कृपयता के कारण परिवार को कमी अर्थात्ताव ने नहीं सताया और न कमी इस कुटुम्ब की कर्म सता पड़ा।

मुमताज में रहते हुए ही 'बाबू जी' ने 'शिवनारायण सम्प्रदाय' के एक महन्त न शिवनारायणी मत की बीता ले ली थी। गुद और दिबर पर आपकी अटूट मठा थी। वत पुजा और शान में अपूर्व आस्था थी। आपकी अपने गुद शिवनारायण पर अटूट मठा थी। गुद जी का जन्म स्थान 'चन्द्रवार' गाँव गाजीपुर है। बहाँ की माया आपने पैरस हो ली थी। जगसाव जी की भी माया आपने की थी। गुद भक्ति आर्थिक प्रवृत्ति और बिडता के कारण आप भी एक महन्त माने जाने लगे थे। आप बलि देने के विरुद्ध थे। अन्धविश्वासों माइ-धूँक और अनुक्ति-युक्त बातों को नापसन्द करते थे। आपके प्रकार का पन्थ यह हुआ कि अनेक लोगों ने आप डाँध बिजाए गए नपथक अनुसरण किया। आपके हजारों शिष्य आज भी बिहार में हैं। आपका स्वभाव विनम्र और बवानु था। माँगने वाला कमी आपके घर से जाती ह्राव नहीं गया। जिस किमी को कुछ दिया वह मश के लिए उमको दे दिया फिर उनसे वापिस नहीं माँगा और तकावा नहीं किया। रबार् दुम्बा टापी कुरता अचकन आदि गुद नी लेते थे। छप्ते-मोटे रो रें

का इसाज भी कर लेते थे। यदि किसी दिन माँ ने अपने को कभी किसी दरबार को सेवा सहायता मानी तब आपने अभी उसको देने से मुन बनी होगा। यदि बाँों की महारता करण के लिए तब तब १८१० थे। यदि वा हृदय अपने स्वयंभार से जोर दिया था। फगत आपका परिवार को कभी तबों के मन्दाचार का साधन करना नहीं था। इन दरबार के साहायण के पक्ष जगजीवन राम का वाग्विहारा यह एक उल्लेखनीय बात है। इसका उक्त विचारों पर भारी प्रभाव पड़ा है। धोपिज बंदे के प्रतिनिधि हान पर भी यदि आपने उद्यता और रोष का अभाव है तो इसका कारण पिता श्री छोनी राम से मिली यह विरासत है।

धैर्यता में आपको बिरादरी के लोगों को पानी की बहुत तकलीफ थी। आपके मुहल्ले में कोई कुआँ नहीं था। इसके कारण बहुत बुरा भोसवा पड़ता था। यह देखकर 'बाबू' श्री ने एक कुआँ बनवाया। कुआँ अपनी घर के आँगन में बनवाकर मुहल्ले के बीच बनवाया। परोपकार एवं आभारवाण की यह भावना उनके पुत्र में भी आई।

कलकत्ता में बहुत दिन रहने और नीररी करने से अब सरीर बल गया तब 'बाबू' श्री अपने नाब आ गए। बँदवा में रहते हुए श्री धिन्नरामच पंथ के बहुत से जन्मों को अपने हाथ से रिंगा। उनको प्रगतिविधि बगोरप एवं कलायुष्य थी।

नीररी छोड़ने के बाद ही बँदवा गाँव में रहते हुए सात लक्ष्यों के बाव बाटरी एम्पान आपके ५ अग्रेत १९०८ को हुई। अब तक आपके दो पुत्र और पाँच लड़कियाँ हुई चुकी थी। किन्तु दुराच पुत्र पाँच साल की आयु में ही मर गया था। इसलिए गोमरा पुत्र पाकर पिता का हृदय पुनर्विद्य हो गया। इस पुत्र का नाम उन्होंने जगजीवन राम रखा। नाम का बाकक के साथी जीवन पर प्रभाव पड़ता है यह माम्यता पुरानी है। 'बाबू' श्री की भी इस बात पर अट्टा बोलती थी। इसलिए नाम चुनने में उन्होंने बहुत सुझ-बुझ का परिचय दिया। जहाँ ईश्वर की आय नहीं मुले वहाँ करने मनोरथों को—एक पिता अपने पुत्र को इस दुनिया में विस्वास ठीक निरुसा और जीवन राम ने अपने कार्य में श्री मूर्तबप दिया। उनका हुई और श्री बाग 'बाबू' श्री ने उनका

गया है । उन्होंने एक दिन अपने छोटे पुत्र को अपने पास बुलाया । अत्यन्त स्नेह से अनेक बार पुत्र के सिर और पीठ पर हाथ फेरा । फिर गद्गद् कण्ठ से बाते 'एक को तो कुछ अंग्रेजी पढ़ा पाया परन्तु तुमको तो अभी हिन्दी भी नहीं पढ़ा पाया । अब मैं जला परन्तु जलो तुम्हें किसी बात का हर्ष नहीं होना तुम सार्को-सार्क पास होते जाओगे । सन्त पिता का पितृभक्त पुत्र को दिया गया आशीर्वाद विफल नहीं हुआ । पुत्र भी आज अपनी कीर्ति अपनी योग्यता और अपनी उफानवा का ध्येय अपने पिता के इस आशीर्वाद को रेटा है ।

जगजीवम राम के पिता की आयु लगभग ५ वर्ष की होयी जब उनका देहान्त हो गया । मृत्यु के समय आपको कुछ भी कष्ट नहीं हुआ । लोगों को कसना भी नहीं थी कि आज आपका अन्तिम दिन है । स्नान कर स्वच्छ वस्त्र पहने हुए थे । शिवतारक्यन संत-सम्प्रदाय के अनुसार संतपति (भगवान्) की पूजा करने के निमित्त 'बाही' समाने के लिए लोगों से कहा था । पर जब आपके भक्तों ने ही 'गायी' बनाने को बदले दिन के लिए टाल दिया तब आपने सास खोबी और 'सुखो' को बने गए । पिता की आज देने का काम छोटे पुत्र ने किया । जगजीवम राम की अवस्था इस समय कैवल्य छ वर्ष की थी । परन्तु इस पर भी दस दिनों तक आपने बिबि-बिबानों के अनुसार जीवन बिताया । नमक खाना छोड़ दिया घर से बाहर निकलना छोड़ दिया और किसी निषिद्ध चीज का आपहू नहीं किया । बसमें दिन यात्र हुआ और एक बत्ती के समान भस्म एवं निष्ठापूर्वक आपने सब नियमों का पालन किया ।

योग्य पिता का वरह हस्त बट गया । किन्तु उस स्वान की पूर्ति माता जी एवं बड़े भाई ने कर दी । आपको कमी किसी चीज का अभाव नहीं होने दिया । आपकी पढ़ाई में किसी प्रकार की बाधा न पहुँचे इसका बड़ा भगत रखा । घर का कोई काम अभी तक बनता था आपसे नहीं लिखा जाता था । घर घर की इच्छा यही थी कि लड़का अपना सारा ध्यान पढ़ाई में समाने । आपके गुरु कपिल भूति तिवारी जी आपका विशेष रूप से इत्तल रखते थे । गुरु-कृपा होने से आपको पढ़ाई में किसी किसम का बिघ्न नहीं आया । पढ़ने पर आप भी खूब ध्यान रखते थे । पढ़ा पाठ याद कर लेने के बाद ही घर से खेलने के लिए निकलते थे ।

गुरु आपको प्यार भी करते थे । किन्तु एक दिन गुरु ने आपको पीट दिया एक सड़क में आपका अवनति हो गया था । उमने आपको माप और जबाब में आपने उनको मारा । बहुत मार मसका और खोर में बिसकाया । गुरु को ने समझा शरारत इन्हीं की है और न पूछा-ताछा और बेत जड़ दिया । बालक स्वामिमानी था । उसन हट पकड़ लिया कि अब बहुत हम पाठशाला में न पड़ेगा । स्कूल में आधी छुट्टी होने न बाध है एक काम में बने था । वही एक मोटी लकड़ी तोड़ी और एक पड़ पर बड़कर बैठ गए । आपका मन प्रतिहिमा की भावना में उड़ोण था । आपका बिहार था कि जो



कोई यहाँ आयेगा और पाठशाला चलने के लिए कहेगा उसकी इसी छाठी से भरमसाक्त होगा । जाने की छुट्टी समाप्त होने पर सब लड़के तो पाठशाला आ गए पर आप नहीं पहुँचे । आपकी ईंट गुरु हुई । लड़के घर आये गए और ने आपसे लौटकर खबर माए कि वहाँ आप नहीं हैं । अब आपकी खोज और जोर-शोर से शुरू हुई । कुछ लड़के आपकी खोजते हुए बाग में पहुँचे । वे यह देखकर हैरान रह गए कि आप एक मोटी लकड़ी लेकर पेड़ पर बैठे हुए हैं । लड़के उनके इस उग्र रूप को देखकर डर गये । पहले तो आप पड़ से उतरने और पाठशाला जाने को राजी नहीं हुए । आपके छात्रियों ने बहुत समझाया बुझाया, कसत आप नीचे उतर आये और पाठशाला पहुँचे । वहाँ गुरु के पीछे छुए और कहा बस गुरु जी बिना इस पाठशाला में अब मैं नहीं पढ़ूँगा । लड़के हा हठ यहाँ तक पहुँचेवा इसका गुरु जी को ध्यान न था । इनकी माँ भी यह कह चुकी थी कि उनका बच्चा अब इस पाठशाला में नहीं पढ़ेगा । परन्तु गुरु जी भी मानने वाले न थे । वे घर पहुँचे । उन्होंने इनकी माँ को विश्वास दिलाया कि इस प्रकार की बटना फिर न होगी । इसके साथ बात समाप्त हो गई ।

इनके चरित्र पर इनकी माता जी का गहरा प्रभाव पड़ा है । माई तो कसकरते रहते थे । इसकी पढ़ाई और चरित्र का क्या रखना तो माता जी पर था । उन्होंने ही इन्हें पढ़ाया और मोप्य बनाया । यद्यपि वह पढ़ी लिखी नहीं है पर बहुत धार्मिक और पूजा-पाठ इन नियम करने वाली है । चाय ही कोई बात छोड़ती हो । सैकड़ों मजन प्रमाती उन्हें कष्टस्व है । रामायण आदि बर्मग्रन्थों के बहुत से अंश उन्हें स्मरण हैं । बचपन में आपको भी-मुड़ का बड़ा चाब था । जमा भी और मुड़ बड़े चाब से आते थे । सिकहर पर टींगी बही की हुँकिया के ऊपर से आप मा की आब बचाकर मकाई निकाल लेते थे । मकाई भी इतनी सफाई से लगाते थे कि किसी को आप पर संदेह ही नहीं होता था । माँ यही समझती थी कि रोब जुहा ला आता है । एक दिन जब कुछ आपने यह मेव खोला तब सब लोग हुँस-हुँस कर लोट-पोट हो गए । आपके जीक के खेक थे— पतंग उड़ाना कबड्डी और बीका खेलना । पढ़ने के समान खेलने में भी आप अपने छ छात्रियों में एक थे ।

बर्म के प्रति रुचि आपको अपने पिता से बचपन में ही मिली थी । छोटी अवस्था में ही आपको ईश-भार्जना मजन सोहे आदि कष्टस्व करा दिए गए थे । जब पढ़ने लगे तब रामायण हनुमान-बाबीसा बान-सीसा आदि भी आपको याद कराया गया । हनुमान बाबीसा का तो आप रोब प्राप्त स्थान के बाद पार करते थे । रविवार को रामायण का बान करते थे और गुरुदेव के योग जमा हो और उनको सुनते । बान-सेवा की मानता उसी समय ने आपके हृदय में अंकुरित है । नाब नाब आपने बहुत प्यार करते थे । उनका काम भी आप कर देते थे । उनकी चिट्ठी पढ़ी लिखने से कभी आपने इन्कार नहीं किया । अपनी विद्यापरी के लोग आपको मानते हैं । किन्तु दूसरे भी आपको

एक होनहार बालक समझ कर प्यार करते थे ।

एक दिन घाम को आप बीका लेन रहे थे । खेलते-खेलते आपका पाँव अचानक कुत्ते पर पड़ गया । कुत्ते ने बचने में उछल कर आपकी ओर से बाट लिया । बाँट गहरे लगे थे । घूँस को चार फुट पड़ी । पर कुत्ता ज़हरीला नहीं था । अतः विशेष चिन्ता की कोई बात नहीं थी । परन्तु बिपत्ति कभी धकली नहीं जाती । आपके घर के पीछे एक बरसाती नाला बहता है । वर्षा-ऋतु में यह नाला सरकर बहता है । नाला अधिक चौड़ा नहीं, किन्तु पानी का प्रवाह तेज होता है । आप अपने एक मित्र के साथ नाले में नहाने गए । बरसात के दिन थे । नाला बहा हुआ था । दोनों साथी निरसक होकर पानी में कूद पड़े । तैरना दोनों में से कोई नहीं जानता था । तेज चार का एक प्रबल वेग आया और दोनों बह गए । साथी सा हाव-नीर मारकर बाहर निकल आया । सप्पा का समय था । कोई पास न था । आपके लिए निकलना कठिन हो गया । नाबी भी कोई उपाय आपकी बाहर निकलने के लिए नहीं सोच सका ।

अकस्मात् उसी समय सुभर चरानी हुई एक मुसहरिन निकल आई । उसने आपकी हालत देखी और भट में अपने हाथ की लकड़ी आपको ओर बढ़ा दी । लकड़ी का निच जब आपके हाथ में आ गया तब उसने आपको किनारे पर खींच लिया । आपकी माँ इस घटना को कभी नहीं मूछी । आनसी जान बचाने वाली मुसहरिन को भी कभी नहीं भुलाया गया । यह आपका दूसरा जन्म था । इस जन्म की बाबी भी मुसहरिन फिर आपको कैसे भुलाया जाता ?

पाँव की परीक्षा समाप्त कर आप आराम में जाकर पड़ने लगे । यहाँ क मिडिल स्कूल और उसके बाद हाई स्कूल में आपने अपना नाम लिखाया । उस समय मछून विद्याभियों के लिए कोई सुविधा नहीं प्राप्त थी । मछून हाउस के जाने नहीं बल्कि अपनी योग्यता के कारण आपने अपनी प्रीम माफ करवा ली ।

जब आप प्यारह साल के थे तभी आपका मोनपुत्र गाँव के धीमूलसाल की लकड़ी से पहला विवाह हुआ । सान साल बाद आपका बीमा हुआ । १८-१९ वर्ष की आयु में अरु पर पत्नी का भार आ गया । किन्तु इसमें आपकी पढ़ाई रुकी नहीं । बल्कि इसने आपका पढ़ाई में और बल मिला । आप उच्च शिक्षा या नक इसका ध्येय आपकी पत्नी माधवी पत्नी को ही है । वह इतनी पति-परायणा थी कि एक बार आप म्युनिमिपल-बनाव में आरा ही रह गए और रात का भी घर न था और पत्नी ने आपकी प्रतीक्षा में अमीन दर बैठ-बैठे मारी रात गुजार दी । किन्तु मान साल बाद आरकी पहली पत्नी का निम्नस्थान अवस्था में ही बेहोश हो गया । १९१५ में आपका दूसरा विवाह कानपुर में श्री इन्द्राणी देवी से हुआ ।

तदभावस्था में ही आप माधवी ह । आरके माधम की भी एक बार कड़ी परीक्षा

हुई। १९२१ में आप पहली बार कलकत्ता गए। इस समय आप युवावस्था में पर एक लड़के थे। वहाँ एक मास रहकर कलकत्ता में प्रस्थान किया। वहाँ रहते हुए ही आपने शिक्षारामय सम्प्रदाय के एक ब्रह्म से रमिरास पत्र की बीछा ली। कलकत्ते से जब आप आपसे लौटने लगे तब आपको बड़े माई ने ९ रुपये के नोट दिए और कहा वृद्ध को अपने पास रखी और जब अत्यन्त आवश्यकता पड़े तब इसमें से खर्च करना। घर आने पर आपने उसमें से २ रुपये ले लिए और छेप को रजत मुद्राओं में बदल कर हाथी में बाँधकर बैठकालाने के कमरे के अन्दर जमीन में बाड़ दिया। एक मास बाद अचानक माँ के अन्दर भयकर बाड़ आई। बाड़ भी आधी रात के समय आई। जब आपकी बीह लुकी उस समय घरबाजे तब बाड़ का पानी आ चुका था। मुहल्ले वालों की सहायता से सामान निकालने और मुरसित स्थान पर पहुँचने में सफल हुए। पानी बराबर बढ़ रहा था। सबके मुरसित स्थान पर पहुँचने के बाद आपको जमीन में गड़े रूपों का स्मरण आया। पानी उस समय बहुत बढ़ आया था। पर आपने हिम्मत नहीं हारी। बाड़ के बढ़ते पानी की परवाह न कर आप अपना निकाल ले आये और वह अपनी माँ को दीप दिया। आपके घर से निकलने के कुछ मिनट बाद मकान डहकर गिर पड़ा। आधी रात के बाद पानी कम होने लगा। सुबह होने पर जब आपने अपने मकान की ओर नजर दीकई तो देखा कि वह मुरसित हुआ पड़ा है। मकान के मकने तक की पानी बहाव पया था। इस समय आपके मन की कैसी अवस्था हुई होगी इसकी सहज में अनुमान की जा सकती है।

इस घटना के तीन साल बाद की बात है। १९२९ के मई महीने में महामना माळवीय जी आया आए। बहुत सार्वजनिक सभा में उनको अभिनन्दन पत्र दिया गया। उसकी आपने पढ़ा था। महामना माळवीय जी इससे बहुत प्रसन्न हुए। आपको महामना माळवीय जी ने अपने पास बुलाया और कहा कि प्रवेशिका (इन्पेस) परोक्षा पास कर हिन्दू-विरुद्ध-विधायक में पढ़ने आना वहाँ पढ़ाई की सारी व्यवस्था हो जायगी। १९२९ में आपने प्रवेशिका परोक्षा प्रथम श्रेणी में पास की। गणित में आपको छठ प्रतिघट अंक मिले थे। इसमें उत्साहित हो और महामना माळवीय जी के वचन को याद कर आप विरुद्धविधायक गए। १९२९ में वहाँ से आई एस सी पास किया। किन्तु वहाँ का वातावरण आपको संतुष्टि एवं संकोच प्रतीत हुआ। पुनः आप कलकत्ता चले गए। वहाँ रहते हुए आपने १९३० में बी० एम सी० की परोक्षा पास की।

आपकी इच्छा नौकरी करने की नहीं थी। किन्तु माई के आपस पर आपने आवकारी विभाग के इन्स्पेक्टर के लिए प्रार्थना-पत्र दे दिया। जिस दिन आपको वहाँ नौकरी पर जाना था उसी दिन आप अस्वस्थ हो गए। गेब बढ़ा और निमोनिया में बदल गया। इसमें कई सप्ताह लग गए और उपर बहाव का दिक्कत टल गई। देहबन्धु दास अरविन्द घोष तथा मुरेन्द्रनाथ बनर्जी के समान इस घटना के कारण आपके जीवन

प्रभाव भी बरस गया और अब आपने सब विद्याओं से मुक्त होकर बलिष्ठ जाति की सेवा में अपना जीवन उत्सर्ग करने का निश्चय कर लिया ।

छात्रावस्था में ही आप बलिष्ठ जाति की सेवा में लग गये थे और आपने शिक्षास समाज का संघटन किया था । कावेय के कार्यों में भी आप कुछ-कुछ हिस्सा लेने लगे । १९३२ में आप कलकत्ता से अपने गाँव आये हुए थे । इस समय गाँधी जी ने अपना अनघन दत्त किया था और उसके बात मझोरेदार आन्दोलन आरम्भ हुआ । असुस्मता निवारण संघ (जो पीछे बदलकर हरिजन सेवा-संघ के नाम में परिवर्तित हुआ) की स्थापना भी हो चुकी थी । बिहार में इस कार्य का प्रवर्धन करने के लिए सूर्यपुत्र के राजा भी अधिकारमय प्रसाद सिंह की अध्यक्षता में एक समा हुई । सर्वत्र हिन्दू असुस्मता के कर्कश को सर्वथा अन्त करने को उत्सुक थे । वे देख चुके थे कि 'संशान्त निर्वय' किस प्रकार इसकी जाड़ भेकर हिन्दू समाज से समय-समय पर चौपाई को काटकर अलग कर देना चाहता था । यदि गाँधी जी यरबराबेल के आस पास के गाँव अपने प्राचीन की बानी न लगा देते तो मैकडानल-निर्वय देने वालों के मनोरथों के पूरा होने में क्या संदेह रह गया था । इस कारण हिन्दू इस कर्कश को मिटाने के लिए कुछ न कुछ करने का ध्येय थे । यह समा पटना के अन्दर 'संभ्रमन इस्लामिया हाल' में हुई थी और बंगालीजनराम को भी बुलाया गया था । कलकत्ते में रहने के कारण कलकत्ते और बंगाल के नेताओं में इनका परिचय तो था पर यह पहला अवसर था जब आप बिहार के प्रान्त भर के नेताओं के सामने आप और आपकी योग्यता और शक्ति तथा प्रभाव की साक्ष्यपूर्ण रूप से स्वीकार किया गया । २५ वर्ष के युवक को सहसा इन प्रकार का सम्मान मिला तो उसकी क्या अवस्था होगी ! आपने इस अवसर का पूरा फायदा उठाया । मुक्तचित्त-व्यंग्यता और आदेश आपके भाषण में था । राजेश बाबू आपकी तरफ आकृष्ट हुए, आपकी मानता की वजह से नहीं । 'सर्वेष्ट आफ बी जन-टचडुम मोमाइनी' के संघटन कर्तव्यों ने आपकी सेवाओं में लग उठाया । यह संस्था 'बिहार हरिजन सेवा संघ' में विलीन हो गई और आप भी इसके एक मंत्री चुने गये । मंत्री की हैसियत से आप अपने काम में जुट गए । गाँवों में हरिजनों के लिए आपने कुएँ खुदवाए । हरिजन बालकों के लिए पाठशालाओं की स्थापना की । आपको ६५) धार्मिक इन कार्य में मिलने थे । हमको भी आप इसी कार्य में लगाने दें । १९३४ में भूषण आया । गाँधी जी भी इन अवसर पर बिहार आए । आपने प्रथम बार इसी मौके पर गाँधी जी के दर्शन किया और उस हीरे में बरकर गाँधी जी के नाम रहे । इसी वर्ष आप शिक्षा मंत्रालय के मुखेय अधिकारी के नामावलि चुने गए । यश की सीढ़ियों पर आप उत्तरोत्तर चढ़ते जा रहे थे । किन्तु उन समय भी चिन्ता की कल्पना इतनी दूर नहीं पहुँची थी कि आप एक दिन स्वाधीन भारत के पंजी भी बन सकें ।

राजनीति में भी मुक्त-हृदय को अपनी ओर खींचा । यहाँ एक बात भी थी ।

कांग्रेस में सभी विचारों के व्यक्ति थे। सामाजिक विचारों में वही भी दक्षिणानुगी है। जाति-भेद वर्ण भेद का संकीर्ण विचार उनमें से भी अनेकों के मन में व्याप्त है। कट्टरता से मुक्त करते हुए उनमें भी मुक्त करमा अनिवार्य है यह आपको पहले ही दिन पता चल गया। दूसरी ओर आपने देखा कि बहुतों तक नेता मंडल का प्रभु हैं उससे आपको कोई मतभेद नहीं। वह सामाजिक उत्पत्ति का पराजयी है। किन्तु वह समाज को छिन्न-भिन्न करके नहीं बल्कि समाज का हृदय और मन एवं उसके विचार बरख कर वह यह चान्ति करना चाहता है। जगजीवन राम की ठोस मूल्य और वास्तविकता को देखने वाली बुद्धि को अपना मार्ग चुनने में वेर न लगी। कांग्रेस के प्रति अविषम भक्ति एवं निष्ठा रखते हुए नार्मिक कट्टरता तथा सामाजिक विपमता और आर्थिक पराधीनता से कुछ प्रकार छड़ा जा सकता है इसका सरल मार्ग आपने इह निम्ना। वही कारण है कि दक्षिणों की सेवा करते हुए भी आप कांग्रेस के चोरी के नेताओं के विदवासापन बने रहे।

फाल्गुन १९३५ में अखिल भारतीय दक्षिण भारतीय नेताओं का एक विराट सम्मेलन हुआ। आप भी इसमें सम्मिलित हुए। वही नहीं आप इसके संयोजकों में से एक थे। इस सम्मेलन का उद्देश्य था दक्षिण जातियों की केवल एक संस्था स्थापित करना। किन्तु यह सम्मेलन सारे देश के लिए एक संघर्ष की नींव डालने में सफल न हो सका। राष्ट्रवादी हरिजनों ने अखिल भारतीय-दक्षिण जाति-संघ (All India Depressed Classes League) की स्थापना की। इस नए संघर्ष के आप प्रधान मंत्री चुने गये। इसी वर्ष इसकी बिहार शाखा के आप अध्यक्ष चुने गये। आपकी स्फूर्तिमय एवं प्रेरणादायी नेतृत्व ने इस संघर्ष को बल तथा दृढ़ता प्रदान की। आपके स्वभाव के माधुर्य और आपकी लोक-संग्रहाक क्षति ने देश-भर के कार्यकर्ताओं को एकत्रित करने और इस संस्था को बलवान बनाने के लिए उनको इस कार्य में प्रवृत्त करने में सहायक हुई। इसका पहला अधिवेशन सखनरु में आपकी ही अध्यक्षता में हुआ और इसका उद्घाटन गांधी जी ने किया।

द्विधरा एक्ट १९३५ के अनुसार देश के अन्तर प्रांतीय असेम्बलियों का चुनाव १९३७ में हुआ। कांग्रेस ने यह निर्वाचन-संधान छड़ने का निश्चय किया। हरिजनों के लिए स्थान सुरक्षित रखे गए थे। श्री जगजीवनराम की कार्य-कुशलता इस समय देखने में आई। बिहार में हरिजनों के लिए सुरक्षित एक भी सीट कांग्रेस ने नहीं दी। परन्तु आपकी इससे भी बड़ी तथा कठोर परीक्षा होगी अभी देखें। कांग्रेस में सरकार की ओर से यह आपवागमन न मिलने तक कि गवर्नर दिन-प्रतिदिन तथा रोज मर्दा के शासन कार्यों में हस्तक्षेप न करेंगे अभिमत बनाने और शासन मूल से इकार कर दिया। बिहार में सरकार ने कठपुतली अभिमत बनाने का यत्न किया। श्री मूनसि मुखर्जी सचिव बनाए गए। इस अभिमत बनाने में आपको भी एक मन्त्री बनाने और कांग्रेस

पार्टी से आपकी फोड़ने का मत्न किया गया । मंत्रिपरिषद् के अतिरिक्त जन का प्रलोभन भी दिया गया और दबाव भी । लेकिन जिन लोगों ने भी जगजीवनराम को समझाया, उनको इस व्यक्ति के दृढ़ चरित्र और उसकी गहरी राष्ट्र भक्ति का परिचय मिला । उनका विश्वास था कि जब मैं पला समाज के व्यापारियों से भस्व समाज का एक सिद्धिंत तथा महात्माकांक्षी युवक और गहरी प्रतिहिंसा की भावना से ही उनका साथ देया और विदेशी शासन को मजबूत बनाने में सहायक होया । किन्तु जगजीवनराम जो सन्त परम्परा और ईश्वर भक्ति की औरियो में पला था—इस प्रबल लोभ के सिक्कार न हुए और उन्होंने देशद्रोह और समाजद्रोह करने से इन्कार कर दिया । गांधी जी सरदार पटेल राजेन्द्रप्रसाद आदि नेताओं ने उनकी इस दृढ़ता पर ब्यापक संशोधन भेजे ।

कुछ दिनों बाद कांग्रेस मन्त्रिमंडल बने । आपको आपकी राष्ट्रभक्ति का पुरस्कार पार्लमैटरी सेबेटररी की नियुक्ति के रूप में मिला । यदि आपकी आयु कम न होती और आप जेल हो जाए होने तो आपके मंत्री होने में कोई सन्देह नहीं था । विकास और सिद्धा बिमान के बें पार्लमैटरी-सेबेटररी बनाए गए थे । आपने इस पद पर रहते हुए हरिजनों की स्थिति सुधारने की ओर पूरा-पूरा ध्यान दिया । स्कूलों और कॉलेजों में हरिजन छात्रों का पौस माफ कर दी गई । पुलिस में हरिजन भिन्न जाने लगे । हरिजनों को विद्याभ्ययन में प्रवृत्त करने के लिए छात्र बृत्तियाँ दी गई । पार्लमैटरी सेबेटररी के नाते बिहार असेम्बली में आपने जो भाषण दिया उससे आपकी योग्यता की छाप सब पर बैठ गई । विरोधियों का निन्दित करने के लिए आप इस प्रकार तथ्यों तथा आंकड़ों को संजोते थे कि वे झग रह जाते थे । आप जब बोलते थे संप्रमाण और साधार बोलते थे । इस समय का अनुभव आपकी मविष्य में बड़ा कामप्रद सिद्ध हुआ ।

सितम्बर १९३९ में महायुद्ध प्रारम्भ हो गया । भारत से सत्ताह किन्हे बर्बर मशनमेंट ने भारत की ओर से युद्ध घोषणा कर दी । भारतीय जनता युद्ध से अपने का अक्षिप्त रचना चाहती थी । ब्रिटिश सरकार की कांग्रेस युद्ध में सहयोग देने के लिए तैयार थी । यदि वह तत्काल देश में उत्तरदायी शासन की स्थापना करना स्वीकार कर ले । ब्रिटिश सरकार का जवाब मकारारमक था । कांग्रेसी मन्त्रिमंडलों ने इस्तीफा दे दिया और देश के भाग प्रान्तों में आर्दीनेम-राज्य या नवर्नर-राज्य स्थापित हुआ गया । आपने भी कांग्रेस का अविश्व मिर-मावे पर रना धामन बार न मुनन होने पर आप बिहार प्रादेशिक कांग्रेस कमटी के मंत्री बहुमत में बने गये और १९४९ तक इस पद पर रहे । १९४० में गांधी जी ने वैयक्तिक सत्याग्रह प्रारम्भ किया । आप भी इसमें सम्मिलित हुए । इस समय आपकी पत्नी की गायमें डार्ल बर्ष का पुत्र था । किन्तु आपन स्वातन्त्र्य-युद्ध से इस समय मुक्त होइना कायरता माना । वह आपकी पहली जेल यात्रा थी । सितम्बर १९४१ में जेल से रिहा होने पर कांग्रेस तथा दलित-जातियों के संयुक्त कार्य में जुट गए

अगस्त १९४७ आया। गांधी जी का 'भारत छोड़ो' आन्दोलन प्रारम्भ हुआ। कांग्रेस महासमिति के बम्बई अधिवेशन में सम्मिलित होने के बाद आप पटना बापत आ रहे थे। मार्ग में ही गिरफ्तारियाँ हो रही थीं पर आप पटना पहुँच ही गये। इस दिन तक आन्दोलन का संचालन पटले में करते रहे। अमेरिकन सैनिकों के वहाँ पहुँचने के बाद इन्हे गिरफ्तार किया गया और हजारी बाग जेल भेज दिये गये। अक्तूबर १९४८ में अत्यधिक रणघावस्था में आप जेल से छोड़ दिये गये। आपको इस समय बीबीसों घरेबू दुखार रहता था। यर्दन में भी बर्ब रहता था। जुलाई १९४४ में इस बीमारी से मुक्त हो गये। स्वस्थ होने पर आपने भारत के विभिन्न प्रांतों का दौरा किया। दक्षिण आदि-नग का अधिवेशन आपकी अध्यक्षता में कानपुर में होने वाला था। किन्तु सरकार इसके नाम से ही चौक पड़ी और उसने इस पर प्रतिबन्ध लगा दिया।

स्व श्री भूलाभाई देसाई के प्रयत्नों से कांग्रेस कार्य समिति के सचिव चिन्हा कर दिए गए। यूरोप में मुक्त समाप्त हो चुका था। अविध-यवर्नमेंट की बगल ब्रिटेन में एन्टी-नार्नमेंट में स्थान ले लिया था। फरवरी भारत में लार्ड वेवेल ने भी कांग्रेस और सीप के नेताओं को शिमला में बुलाया। कांग्रेस और सीप के बीच ५-५ के आकार पर चल रही बातचीत को आपने सँका की दृष्टि से देखा। आप साम्प्रदायिकता से वहाँ समझौता करने के विरोधी थे वहाँ दक्षिण आदि-नग की उपेक्षा कर मुस्लिम-सीप की कांग्रेस के समान मानने के भी विरोधी थे। इस समय आपने अपने विचारों को बिन्दु बुझा किन्तु विनम्रता एवं घासीनता के साथ प्रकट किया उसने आपके स्वतन्त्र व्यक्तित्व की छाप सब पर बिठा दी। पुना-नग के सम्बन्ध में दाँबी की हारा दिये गए एक बक्तव्य का भी आपने प्रकट रूप से विरोध किया। उनकी इस बुझता ने सबको चकित कर दिया। उनका यह स्वतन्त्र रूप अभी तक अप्रकट ही था। इससे उनके सहयोगियों को विदित हो गया कि यह युवक सिद्धान्त की व्यक्ति से ऊँचा मानता है और वैयक्तिक अड्डा एवं शक्ति भी उसको सिद्धान्त के साथ समझौता करने के लिए प्रति नही कर सकती। वे नम्र माने पर कठोर सत्य कहने से भी नहीं झुकते तथा सम्भावित कष्ट उनको उनके निदिष्ट पथ से डिगा भी नहीं सकते। रुपये की अपेक्षा भी कीर्ति और सच की इच्छा बलवती होती है और अनेक बार व्यक्ति इस विचार से अपने सिद्धान्तों का भी परित्याग कर देते हैं। किन्तु आपने बता दिया कि आप इस सोचों के व्यक्ति नहीं और अपने अंगीकृत सिद्धान्तों और आपसों के लिए मर्दे से बड़ा कष्ट मारने की सही प्रस्तुत है।

शिमला-वार्ता असफल रही। १९४६ में प्रांतीय व केंद्रीय असेम्बलियों का चुनाव हुआ। चुनाव में वहाँ अनेक प्रश्न थे वहाँ एक यह भी प्रश्न था कि क्या हरिजनों के हित की प्रवक्ता कांग्रेस है? डॉ० अम्बेडकर दक्षिण आदि-नगों का एक भाव रखकर अपने को मानते थे और उनका कहना था कि 'सीम्पुल कास्ट केडरेसन' ही भारत के हरिजनों की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था है। कांग्रेस और दक्षिण-आदि-नग में उनके इस दावे

को चुनौती दी। श्री जगजीवन राम का नेतृत्व संगठन-कीर्ण तथा उनकी कार्यशमता कम चमकी। १९४६ के निर्वाचन परिणाम ने डॉ० अम्बेडकर के शक्त को प्राण-कास के कोहरे के समान छिन्न-भिन्न कर दिया। ब्रिटिश मन्त्रिमंडल मिशन के पास जब कोई उपाय ऐसा होय नहीं रहा था जिसके बल पर यह कह सकें कि हरिजनो के वास्तविक प्रतिनिधि डॉ० अम्बेडकर हैं। ब्रिटिश जातियों की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था ब्रिटिश राष्ट्रीय संघ के समापति की हैसियत से इन्हें 'केबिनेट मिशन' के समस्त बुलाया गया। इस समय पहली बार श्री जगजीवन राम ब्रिटिश जातियों के अखिल भारतीय नेता के रूप में रंग-रंग पर आए। कांग्रेस को आपके रूप में डॉ० अम्बेडकर का जवाब मिला गया। भारतीय राजनीति में यह घटना श्री जगजीवन राम के वैयक्तिक उत्कर्ष की दृष्टि से ही नहीं बल्कि वैसे श्री यह घटना महत्त्वपूर्ण है। भारतीय समाज का संगठन छिन्न-भिन्न होने से बच गया।

१९४६ में श्री नेहरू के नेतृत्व में कांग्रेस ने अस्थायी मन्त्रिमंडल बनाया। 'कांग्रेस हाईकमांड' ने इस समय आपकी सेवाओं और योग्यता को भुलावा नहीं। यद्यपि आपकी उम्र इस समय केवल ३८ साल की थी फिर भी आपको अग्र-मंत्री बनाया गया। जब भारत के स्वाधीन होने पर पहला राष्ट्रीय मन्त्रिमंडल बनाया गया तो पुनः आप अग्रमंत्री बनाए गए। स्वाधीन भारत का प्रथम अग्रमंत्री होने का धीरे-धीरे इन्हें मिला। वर्ष १९५२ तक आप इस पर पर रहे। इन छः वर्षों में अमिको की अवस्था सुधारने उनकी उनके अधिकार दिखाने और भारतीय अमिकों का विश्व के अमिकों के साथ सम्मान्य ओढ़ने के लिए आपने जिस उत्प्रेरता और लगन से काम किया उसकी प्रत्येक ने प्रशंसा की। पार्लियामेंट में कभी आप असावधान और अनुपस्थित नहीं पाये गए। अनेक आपने बितने बित पार्लियामेंट में पेश किए, उतने धायब ही किसी अन्य मंत्री ने पेश किए, और पास कराए। इन के अग्र मन्त्रित्वकाल में बितने कानून बने धायब ही किसी देश में उतने कम समय में इतने कानून बने होंगे।

अमिकों की स्थिति सुधारने के लिए आपने सबसे प्रथम 'फैमिली एक्ट' में महत्वपूर्ण संशोधन कराए और इसका क्षेत्र विस्तृत किया। न्यूनतम मजदूरी देने का कानून बनाया। यह कोटिहर मजदूरों पर भी लागू हो सके इसके लिए कोटिहर मजदूरों की आर्थिक स्थिति की जाँच कराई। भिक्षु-आश्रमों और मजदूरों के बीच होने वाले झगड़ों को निपटाने के लिए ट्रिब्यूनल की स्थापना की। जिस कारखाने में ५० या इससे अधिक मजदूर काम करते हों उसमें अमिकों के हितों की रक्षा और उनकी मूल-भूत शक्तों की रक्षण के लिए 'बेल्जियम अधिनियम' की नियुक्ति करना आपन कानूनी अव-सर कर दिया।

भारत का प्रथम 'पितृ राज्य' (बेल्जियम स्टेट) स्थापित करना है। इस दिशा में आपके प्रयत्न ने पहला छोटा कदम रखा गया जब भारत के कुछ कुछ हुए संवर्धित



उद्योगों में मजदूरों को 'एम्प्लॉईज स्टेट इन्सुरेंस एक्ट' ( सेवा नियुक्ति राज्य-जीमा अधिनियम ) के अन्तर्गत सामाजिक सुरक्षा का वहना लाभ प्राप्त हुआ। यह कानून अभी २५ लाख मजदूरों पर ही लागू हुआ है। इससे मजदूरों को स्वास्थ्य-जीमा प्रसूति एक बीमारी के काल में सुरक्षा तथा भविष्य सम्बन्धी सुविधाएं प्राप्त होती हैं।

आप कोई उद्योग किसी बर्थ बिसेप की बपीटी नहीं मानते। आपको मान्यता है कि मिल पर मिल मालिकों के समान मजदूरों का भी अधिकार है और मिल तथा कारखाना दोनों के मालिकों से बचाना चाहिए। 'दि इंडस्ट्रियल डिस्प्यूट्स एक्ट' (बीघो निवृत्ति अधिनियम) आपके इन विचारों का ही परिणाम है। इस कानून के अन्तर्गत मालिकों और मजदूरों के प्रतिनिधियों को एक कार्यसमिति बनाई जाती है जो कि मिल के अन्दर रोजमर्रा होने वाले झगड़ों का फैसला करती है। आपका सचा इस बात का प्रयत्न रहा है कि मिल-मालिक और मजदूर दोनों अपने-अपने राष्ट्रीय हित को सचा रखें और अपने तुल्य वैयक्तिक तथा सामूहिक हितों के ऊपर सार्वजनिक हित को स्थान दें। आप यह कभी नहीं चाहते कि औद्योगिक उत्पादन में औद्योगिक झगड़ों के कारण किसी प्रकार की बाधा आवे। इसलिये आपका सचा प्रयत्न रहा है कि दोनों सचा राष्ट्रहित को सर्वोपरि रखें और दोनों मिलकर कार्य करें। किन्तु इसका अर्थ यह नहीं कि मजदूरों को जीवन निर्वाह योग्य वेतन न मिले उनके बच्चे अधिस्तित रहे और वे अस्वास्थ्यकर अंधेरी कोठरियों में रहे। मजदूर स्वास्थ्यकर, हवाशर, तथा सुन्दर बरों में रहे इसके लिए आपने बड़े पैमाने पर बर बनाने की योजना बनाई थी और इसके अनुसार आखों की रक्षा में बर बन चुके हैं और अभी बन रहे हैं।

आप बागों में काम करने वाले मजदूरों के साथ भी 'म्यूनरल वेतन' का नियम लागू हो इसके लिए आपको मनीरब प्रयत्न करना पड़ा। अन्त में आपका यह प्रयत्न सफल हुआ। १९४७ में आप प्रथम बार इस देश से बाहर बसे और अन्तर्राष्ट्रीय श्रम परिषद जेनेवा के अधिवेशन में भारत सरकार के प्रतिनिधि मंडल के नेता के रूप में उन्मिलित हुए। १९५५ में पुनः जेनेवा गए और इस बार अन्तर्राष्ट्रीय श्रम-परिषद ने आपको सर्व सम्मति से उस अधिवेशन का अध्यक्ष निर्वाचित किया। परिषद के अध्यक्ष के नाते आपने जो भाषण किया था वह अनेक दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। छोटीहर मजदूरों की समस्या आपका एक प्रिय विषय रहा है। १९५७ के उनके संवत्स की और आपका ध्यान है। इस अवसर पर भी आपने उनको सुनाया नहीं।

१९४७ में जब आप जेनेवा से वापस लौट रहे थे तब आप भारत लौटते हुए बलरा में हवाई दुर्घटना की लपेट में आ गए। रात भर बर-बरम बानू पर तड़पत और छटपटाते हुए पड़े रहे। बाहिना पैर टूटे हुए हवाई अड्डा में फँस गया था। उसको निकालते हुए आपके गीस की हड्डी टूट गयी। घुटने में लकड़ों का एक पैदा चुस गया था और वहाँ से जून की चारा बह रही थी। दो पसलियाँ टूट गयी थी। घाटीर का ऐसा

कोई भाग न था जहाँ आपको चोट न लगी हो। इस पर भाव के समान गरम रेत बिछीना बनी हुई थी। प्यास बुझाने के लिए पानी नहीं था। एक साथी की मेहरबानी में पानी की कुछ बूँदें मिल जाती थीं। मृत्यु जब सिर पर सँझा रही थी जीवन का कुछ भरोसा नहीं था उस समय इन पानी की बूँदों में ही अमृत का काम किया। आपका मद्य आपसे पहले ही यहाँ पहुँच चुका था। जब बसरा के नागरिकों को ज्ञात हुआ कि हवाई दुर्घटना में भारत के भ्रम-मंत्री भी हैं तो एक हजार नागरिकों ने बसरा अस्पताल के अधिकारियों को उनके लिए अपना खून देने की तैयारी दिखाई। परन्तु इसकी आवश्यकता नहीं पड़ी। पन्द्रह दिन वहाँ रहे फिर दो भास बिल्किंगइन अस्पताल में रहे। टूटी टाँग बुझ गई, पर यह हवाई-दुर्घटना आपके घटीर पर अपना अमित प्रभाव छोड़ गई और आज भी आपका दाहिना पैर पूरा ठीक सीधा नहीं मुड़ सकता। आप और आपका परिवार स्वर्गीय डॉ. भार्गव को कभी नहीं भूल सकता जिनकी सेवा के फलस्वरूप आप पुनः देश सेवा के योग्य हो सके।

अधिकों के अधिकारों के दो एक सतर्क रक्षक और सावधान प्रहरी हैं। अधिकों को सरकारी सहायता की आवश्यकता क्यों है यह बताव हुए आपने सिखा था

‘हम उन अधिकों को अपनी दृष्टि से जोरक नहीं कर सकते जो संघटित नहीं जो अपने पाँव पर खड़े होने के बारे में सोच भी नहीं सकते जो इस स्थिति में नहीं कि अपनी माँगें तथा सिद्धांतों मामलों जनता तथा सरकार के सामने रख सकें। अतः यह अत्यन्त आवश्यक है कि सरकार उनकी सहायता के लिए उनका पालन पोषण और जब उनके तथा उनके अधिकों के बीच कोई झगडा हो तब उनके पारिधमिक एवं उनके काम की अवस्थाओं को सुधारने का प्रयत्न करे। यदि मैं इसे और स्पष्ट शब्दों में कहूँ तो कहना होगा कि अधिकों को बहुत बड़ी मर्यादा जामों चाय-बानानों तथा इन्में भी अधिक बारी के काम के लिए इन देश में लाखों पाँवों में नियुक्त हैं। अधिका जनता तथा कमजोरी के शिकार होने के कारण इन अधिकों की अवस्था अत्यन्त अतृप्तोपग्रह है।

परदक्षिण और छोपित मानवता के अधिकारों के लिए निरन्तर समर्पण करने वाले वे शेर घोड़ा हैं। वे राजनीतिक स्वाधीनता पाकर प्रसन्न होने वाले नहीं। उनकी पुकार है

‘यद्यपि १५ अगस्त के बाद हमें राजनीतिक आजादी मिल गई है। तथापि अभी तक हमने आर्थिक आजादी नहीं प्राप्त की। सामंतिज आजादी है यद्यपि तथा अधिका को दूर करना तथा देश के लाखों बेहमतकश्यों को उचित मुक्त-मुक्तिवाएँ, रजन सहन की स्वस्थ अवस्था तथा कम से कम दो बहन पेट भर भोजन देने का आश्वासन देना। किन्तु यह तभी हो सकता है जबकि भ्रम और पूर्वी होना आपस में भाई-बहिन की तरह बर्तान करें और पूर्वी भ्रम की कठिनाइयों को परिभाषित तथा छोड़े में लोका के हाथों में जन का एकज होना रोका जाय।

मुट्ठी भर लोभो के हाथों में समाज का सारा धन एकत्रित न हो इसी विचार से आप उद्योगों का राष्ट्रीयकरण करने से के पक्षपाती हैं। नागरिक हवाई उड़्डमन का राष्ट्रीयकरण इसी प्रेरणा से आप कर रहे हैं। संवाद न संचार के साधनों पर किसी एक व्यक्ति का नहीं राष्ट्र का अधिकार होगा चाहिए, यह भावना ही इसके राष्ट्रीयकरण की प्रेरक कारक है।

जो भूमि को जोतता है वह ही उस जमीन का मास्कि होना चाहिए। आप इस सिद्धान्त को मानते हैं। इस प्रसंग में आपके निम्न विचार ध्यान देने योग्य हैं

'जिनकी जीभका ना मुख्य साधन खेती करना न हो तथा जिन्हें खेतों में स्वयं काम करने में किसी प्रकार की शिस्तक हो उनके अधिकार में खेत भर भी जमीन न रखनी चाहिए। उन्हें भी जमीन से हटा देना चाहिए जो हल जोतने या खेत में अन्य काम करने में अपनी हेठी समझते हैं और अपनी प्रतिष्ठित और आत्माविमान के विपरीत मानते हैं। जमीन की पैदावार बढ़ाने तथा मानवीय-धन का समुचित उपयोग करने के लिए सामूहिक वा सहयोगिक खेती की व्यवस्था करने पर भी इस बात का ध्यान रखा जाय कि ऐसे व्यक्ति को जमीन न दी जाय जिसके परिवार से लिए खेती के सिवाय आजीविका के लिए और कोई बंधा हो। जिस परिवार की जीभिका और पेट पालने का और कोई साधन तथा सहाय हो उसका जमीन पर किसी भी रूप और हास्य में हक न होना चाहिए। जो खुर अपने हाथ से खती करता हो वह उसका ही जमीन पर अधिकार हो। यह होने पर जहाँ जमीन पर आवश्यकता से अधिक लोगों को पालने का सारा न होना बहाँ खेत में परिश्रम करने वाला भी कुछी सम्पन्न एवं आनवान होना।

केन्द्रीय मन्त्रि-मंडल में आप संचार-साधन विभाग के मंत्री हैं और मंत्रिमंडल में आप ही सबसे अल्प-वयस्क हैं। किन्तु अल्प समय में ही इन महान्-सफलताओं से आपके जीवनरस के पहिये रक नहीं गये हैं तीव्रगति से राष्ट्र-निर्माण के अटल मार्ग पर गतिशील हैं। साधारणतया सफलताएँ व्यक्ति को दम्भी बना देती हैं किन्तु आप इसके अपवाद हैं क्योंकि इन सफलताओं को जीवन की परम सिद्धि नहीं मानते। आपके लिए तो ये नव-मानव के निर्माण के स्वप्न को साकार करने वाली पूर्व-पीठिकाएँ मात्र हैं। इसीलिए आज आप भी संवर्धनीय और क्रियाशील हैं—वन्दानियत के महान् स्वप्न की पूर्ति के लिए।

गैरि-सास्त्र के पाठ्यालय विज्ञान मेकेनरी का कहना है श्रेष्ठ चित्रकार वह है जो सुन्दर चित्र बना सकता है पर श्रेष्ठ गण्य वह नहीं जो उचित कार्य कर सकता है बल्कि वह है जो उचित कार्य करता है। श्रेष्ठता कोई योग्यता नहीं है बल्कि वह तो सतत क्रियाशीलता है।

श्री जगजीवनराम के जनरल क्रियाशील व्यक्तित्व की श्रेष्ठता भी इसीलिए है कि वे भविष्य के निर्माण के लिए निमाधीन वर्तमान के सजीव प्रतीक हैं।

## श्री जगजीवन राम के स्फुट विचार

‘जब तक भूल-भूक के पुराने पापों का नाम निषाग मिटाकर नया अभ्यास गुरु नहीं किया जाता तब तक कोई भी लोकप्रिय सरकार संतोष की राह नहीं ले सकती ।

‘मजदूर वर्ग में उन मजदूरों की संख्या सबसे ज्यादा है जो कि सड़ों पर काम करते हैं । लेकिन हमारे लिए धर्म की बात है कि वही सबसे अधिक पर-रक्षित है । उन्ही पर काम का बोझ सबसे अधिक पड़ता है और उन्हें उस हद तक दबाया और शोषित किया जाता है जिसे कि आज के समाज में आदमी को प्रतिष्ठा के बिस्तृत विकास समझा जाता है ।

‘मजदूर को छेद और कारखानों में प्रतिष्ठित करण तथा समाज में उचित स्थान दिलाने में ही वास्तविक स्वराज्य है । आओ ! हम सब मिलकर उसके लिए कार्य करें और अपने स्वप्नों के भारत का निर्माण करें ।

‘साम्राज्यवादियों से सफल लड़ाई लड़ने वाले परिश्रम सेहत पूंजीपतियों से नहीं उठते । उन्होंने तो सिर्फ पूंजीपतियों को अपना मुबार करने के लिए समय दिया है ।

‘प्रजातन्त्र में विभी भी राजनीतिक हक को सरकार बदलने का हक है लेकिन उसे यह हक नहीं कि वह अपने राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए मजदूरों को घुम राह करे ।

‘समाजवाद और साम्यवाद के अन्तर्गत पाँचीवाद भी है जिसे कि भारत को राजनीतिक आजादी दिलाई है और वह अब उन आर्थिक स्मृति भी दिलाएगा ।

‘भारत सरकार की अम नीति का मुख्य एसे अवहीन समाज का निर्माण करना है जहाँ कि मजदूर और पूंजीपति उद्योग में आनीशर समझे जा सकेंगे । काम का बिभाजन गुरु इसका मुख्य तरी है बल्कि मनोवाछित लक्ष्य तक पहुँचने के लिए वह साधन साध है ।

‘उत्पादन को बढ़ाये और न तो मुद्रा-स्फीति का दुःखता या मजता है और न जीवन मान का ऊँचा उठाया या मजता है ।

‘साम विभाजन का सिद्धान्त वा औद्योगिक प्रजातन्त्र की सुरुवात है। इसके लिए हम सबको मिलकर काम करना है। ताकि हम सहकारी राष्ट्र-मण्डल बनाने की दिशा में अधिक प्रवृत्ति कर सकें क्योंकि यही तो हमारा लक्ष्य है।

‘यदि सम्भावना से काम लिया जाय तो सभी विभागों में समझौता हो सकता है। मजदूर बन्देबाज के पास है क्योंकि राजनीति दलों के गुमराह करने का प्रयत्न करने पर भी उनकी ओर से इस विद्या में अनुकूल प्रतिक्रिया हुई है।

‘यदि आदमी के पास पैसा है तो वह बुद्धिमान नीच तथा स्वार्थी होने पर भी बड़ा आदमी समझा जाता है और आदर्श चरित्र होने पर भी एक मजदूर का आदर नहीं किया जाता। लेकिन धर्म के बिना पूँजी का कोई महत्व नहीं।

‘क्रिस्तान और मजदूर राष्ट्र की रीढ़ है।

वैयक्तिक सुधार सोधीबाद का सार है जिस कि मार्क्सवाद स्वीकार नहीं करता।

अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में बरती जाने वाला भारत की टटस्थता नीति का आधार माधी की के सिद्धान्त हैं। उन्हें अधिशा छोपण बरोबी तथा अमाश के विरुद्ध खड़ा होना चाहिए एक इनसे भी ऊपर हमें सभी कीमत पर आजादी को काममें रखना चाहिए।

‘पर्याप्त उत्पादन के बिना राष्ट्रीयकरण के कोई अर्थ नहीं। जब तक उत्पादन को बढ़ाया नहीं जाता मजदूरी बढ़ाना व्यर्थ है। मिला सिर्फ विनिमय का एक साधन मात्र है सम्पत्ति नहीं। मैं न तो साम्यवादी हूँ और न समाजवादी। मैं तो सिर्फ मनुष्य मात्र के गुणों पर विश्वास करता हूँ।

‘मजदूर का सतत वैयक्तिक शारीरिक धर्म करने वालों से ही नहीं बल्कि बिनाग तथा कलम का काम करने वालों से भी है।

‘यदि कीमत और साम को स्थिर करना है तो मजूरी को भी स्थिर करना होगा।

‘राष्ट्रीय समस्वाओं की सुरुआत का माश उपाय यह है कि उस विद्या में वह कारिदा की भावना तथा राष्ट्रीय हित की सृष्टि से प्रयत्न किया जाय।

‘सिर्फ आजादी प्राप्त करने से ही लोगों का उत्तरदायित्व समाप्त नहीं हो जाता।

‘यदि जीवन-माल को ऊपर नहीं उठाया गया तो हमारे देश की समृद्धि बढ़ नहीं सकती।

‘अच्छे राष्ट्रीयकरण से हमारे मसले हल नहीं होंगे राष्ट्रीयकरण के साथ-साथ हमारे चरित्र में भी परिवर्तन आना जरूरी है। तभी हम जन-साधारण की समस्या के लिए काम करना सीख सकेँगे जिसमें कि फिर एक दूसरे की सोपण करने का अवसर ही न मिल सके।

‘जमता बिहीन राष्ट्रीयकरण से हर्ष कोई काम नहीं होया।

‘मिर्क आर्थिक क्षेत्र में ही नहीं बल्कि सामाजिक और राजनीतिक क्षेत्रों में भी घोषण समाप्त होना चाहिए। क्योंकि उन सबका पारस्परिक सम्बन्ध है और वे एक दूसरे के साथ जुड़े हुए हैं।

‘भारत सरकार ने प्रतिज्ञा की है कि वह धन के साथ ग्याम करेगी। सरकार ने इस नीति का ऐमान किया है कि आजाद भारत में मेहनतकश अपनी मेहनत के फलों तथा उचित जीवन स्तर का उपभोग करेंगे।

धन को व्यापारिक वस्तु नहीं समझना चाहिए और उसे भी नीकटो में मान-बोझित अवस्थाओं को प्राप्त करने का हक है।

‘उद्योग में सामीप्य होने के कारण धन को सामीप्य से होने वाले काम को प्राप्त करने का हक है लेकिन उसे अपनी जिम्मेदारियों को भी पहचानना चाहिए।

‘परीबी और अशिक्षा को दूर करने में तथा मेहनतकशों को उचित मुविषाण, रहन-सहन की स्वस्थ अवस्थाएँ एवं कम से कम दिन भर में दो बार पेट भर भोजन मुहय्या करने में ही वास्तविक आजादी है।

धन और धूम्र को आपस में जुड़ने भाइयों की तरह व्यवहार करना चाहिए।

‘राष्ट्रीय आपात में हरेक क्षेत्र और कारखाना चरेखू मोर्चे का एक अंग है तथा हरेक मजदूर मिपाही है जिसकी जागरूकता मेहनत तथा ईमानदारी के नाम पर ही ऊँची दीमनों तथा अभाव के लिकाफ मदी जाने वाली हमारी लड़ाई का मविष्य निर्मर है।

‘जमीन उन्हा की है जा कि उस पर काम कर सकते हैं।

‘लठी-बाड़ी में होने वाले धन की स्थिति का दूसरे धन से मुकाबला करने के लिए भारत क रहने वाले को माकम क पास जान की जरूरत नहीं। लठी-बाड़ी में काम करने वाले मजदूर को हमसत उन जानवरों जैसी या उनसे भी बचतर है जो कि शर्तों में हम बछाठ।

‘एमे औद्योगिक उपकरणा की जा कि अपने कामकरों के लिए रहन-सहन का उचित स्तर मुहय्या नहीं करते जीवन रहन के लिए सामाजिक दावा करन का कोई हक नहीं।

‘कामकर मिर्क सभी योग्य और जिम्मेवार बन सकते हैं जबकि उन्हें उचित प्रतिभय अच्छो मजदूरी रहने के लिए उपयुक्त घर तथा पर्याप्त सामाजिक सेवाएँ प्रदान की जाय। अन्यथा धनमयिण व्यापार में लगाई गई सबसे बुरी धूम्र है।

‘हमारे पास अनुशासन उपकरण संगठन तथा उस चीज की कमी है बिना कि हमारीही लोग ‘क्रिस्तरु ध्यानना चाहिए’ कहते हैं ।

‘एक बार हमारे अधिक उत्पादन कर लेने पर साधारण व्यक्ति को भी भवस्य अधिक मिलना चाहिए ।

‘मजदूर वर्ग पूँजीपतियों का सबसे अच्छा साहक है । इसलिए यह गारा होना चाहिए ‘इस वर्ग की कम शक्ति बढ़ाओ ।

‘भय या प्रबल की सहायता के बिना यह आधा नहीं की जा सकती कि सरकार खाली स्थान पर काम कर सकती है ।

‘तब तक न तो युद्ध विराम मग्न और न शान्ति ही हो सकती है जब तक कि विरोधी पक्ष किसी एक के लिए प्रयत्न न करें ।

‘आबादी और लुभ की हकूमत खुद आभिरु ज़रूरत ही है बल्कि वे एक मुसीबत की स्थापना में प्रत्येक व्यक्ति का भय और अभाव से आबादी बिलाने के लिए साधन मान है ।

‘जब तक कि मकानों की अवस्था आज भीसी ही रहेगी तब तक न तो सरकार समाज में और न कोई माफिक उद्योग में शान्ति की आशा कर सकता है ।

‘राजनीतिक इतिहास के रूप में की जाने वाली हड़तालों की असफलता निश्चित है और सरकार अपनी सारी शक्ति और साधनों को लगाकर उनका मुकाबला करेगी ।

‘कोई भी सरकार ऐसी कार्रवाइयों को महने के लिए तैयार नहीं जो कि उसे चुनौती देन तथा उसकी हुकूमत को उलटने के लिए की गई हो चाहे वह फिर भय के नाम पर क्रिस्तरु ही प्रगतिशील क्यों न हो भय को ऐसे असामाजिक तत्त्वों की कुमो जनकों से अपने को बचाना चाहिए, चाहे वे तब फिर उसके अपने ही अन्दर के हो या बाहर के ।

‘इस क्षण पहले काबिरी नेताओं को किसी अंधेज की अपनी रसोई में लातिरहारी करने के बजाम जेल वाला प्यादा आसान था ।

‘हिन्दू धर्म तथा समाज के हित के लिए हिन्दू धर्म के कर्षणों को चाहिए कि वे दुनिया को बतायें कि हिन्दू धर्म में शकीर्षता नहीं है ।

‘यदि समाज का कोई अंग परदलित तथा पिछड़ा हुआ हो तो न तो कोई राष्ट्र या समाज शक्तिशाली बन सकता है और न वह दूसरे वर्गों के हकलों का ही मुकाबला कर सकता है ।

हरिजन जनता धन और काम का बिना दूसरे हिन्दू मर्दाने बन नहीं करना और वह हिन्दू बन का छान्दर बिन्धी छन्द धन न वेक्षण होने को बिन्धी का भी स्मरण को नहीं मुनेमी ।

जना वह है जो जनता का मन माय न जना है और जामह देकना है कि बिम निशान का वह समर्थन करता है वह भ्रम में भा मरना है ना नहीं ।

जापरी को हर ममाज में लुचता जाया किन्तु हरिजन बाजर नहीं हैं ।

किमी एक काम पाटी के बाहों का मजबूर काम मया फँदने के लिए गरीब तथा भावे मूल मजदूरों की अज्ञानता का पन्ना उगना एक मरणा है ।

हिन्दू कर्म अमर भावत नवीनता काका धम नहीं ना वह कुछ भी नहीं । अगर वह जन को वर्तमान अवस्थाओं के अनुकूल नहीं बना सकता तो उसे जीवित रहने का कोई हक नहीं ।

उत्पादन और वितरण योजना के अनुसार हाना चाहिए — इसे बाहे राष्ट्रीय करण नहीं या जो आपकी इच्छा हो वह नाम को ।

बकि हिन्दू समाज के बीच के अन्तर्मत आत्मीयता के नामो या अन्य हरिजन भीष ममने जाने हैं ता यह जनता अपना दीप नहीं बस्कि ऊँची जानि बाणों का दीप है । यह एक सामाजिक व्याधि है । यह उनके मुँह से नहीं रहती जिन्होंने गन्दा नाम देने के लिए उन्हें नीच काम करने को मजबूर किया है ।

हरिजनों ने अपन मीठवा पेशो को इसलिए नहीं अपनाया कि वे सभी कामों को अच्छा समझते थे बस्कि इसलिए अपनाया कि समाज ने उन्हें भीष पेशा स्वीकार करने के लिए मजबूर किया ।

मर्मियों की भुक्ति इसी में है कि ऐस समाज का निर्माण दिया जाय जिसमें कि कोई मेहरार न हो ।

आर्थिक कारणों के सामाजिक बाधा दूरता जा रहा है और उच्च जाति के लोगों ने बाई, बोबी तथा मोबी के परो तक को संभाषणा शुरू कर दिया । किन्तु उनमें से किसी ने भी मर्बी का पेशा अपनाने का साहस नहीं किया ।

अस्पृश्यता की समस्या आर्थिक है इसलिए उसे उरी विराय दृष्टिकोण से मुश्किल चाहिए

मिर्क पिछड़े हुए लोग ही जिन्हें कि यातना में और अज्ञानता तथा अन्धकार को मानवीय वास्तता में रखा जाता है महारमा गांधी के राम-राज्य के स्वप्न को वास्तविक रूप में सकल है ।



ऐसे बातावरण में जो कि पारस्परिक अविश्वास तथा संशय से भरा हुआ है और जहाँ कि किरोयी विचारधाराएँ एक दूसरे के खिलाफ निर्धनतापूर्वक छीट मुड़ बना रही हैं केवल भारत ही महात्मा गांधी के शान्ति और प्रेम के संदेश के लिए इस दुःखी दुनिया में समान चैन की स्थापना कर सकता है।

‘प्राप्तीयता का नवीनतम मूल जहाँ भी अपना महा सिर उठाने उसे तुरन्त ही कुचल देना चाहिए।

प्रजातन्त्र को चाहे ब्लाइट हाथ में पेटेष्ट किया गया हो चाहे अमरीका में ठामा किया गया हो तथा चाहे रूस में विघुट किया गया हो लेकिन वह एक विडम्बना है सम्पत्ता है— उसे वास्तविकता से कोई मतलब नहीं। किन्तु कांग्रेस ने जिस प्रजातन्त्र को अपनाया है और राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने जिसे हर्र भरा किया है, वह भारत में शांति और समृद्धि के मूल को लाने का रहा है।

हमारी जाजायी संसार की शान्ति के लिए पारखी होयी और हमारा नैतिक तथा भौतिक बल सबैव भौचित्य तथा ध्याय की ओर होया।

‘उधियायी देश इस समय सार्वजनिक जायूति की बबरखस्त मंजिम से गुजर रहे हैं। उनमें से कोई भी जब किमी निरक्षी धर्मि का केवल मुकाम रहना पसन्द नहीं करेगा।

‘जन सुरक्षा अध्यादेश ( Public Safety Ordinance ) कर्मकारों की आजायी को रोकने के लिए नहीं बल्कि गुमराह कर्मकारों को रोकने के लिए बनाया गया है।

‘ऐसे किसी भी उद्योग को जीवित रहने का हक नहीं जो कि अपने कामकरो को उचित मजूरी नहीं दे सकता।

‘ऐसे संघों की स्थापना हो जो कि अपने सामने कोई और उद्देश्य न रखकर सिर्फ काम-करो के हित-साधन में लगे रहें जो केवल कामकरो के उचित शर्तों के लिए ही लड़ें और जिनके नेता जनता के लिए ही जीवित रहे और नेतामिरी के बोये को सिर्फ अपने नाम के लिए ही न पहुँचें। इनके अलावा धर्म के संघ किसी तरह भी स्थापित न किये जायें।

‘यदि विकासवाय और आजागी की स्वाभाविक अण्डाई के सिद्धान्त को न माना जाय और न वह बिरकास तक स्थिर ही रहे तो फिर मानवता के लिए कोई आशा नहीं रह सकती।

‘नैतिक मूल्य ही वास्तव में अखरी मूल्य है जो कि दुनिया में शान्ति स्थापित

नर चकने हैं और दुनियाँ को बचा सनत हैं ।

‘ज्यों ही समाज में घन शीतल के प्रति आदर कम होता जावेगा और उसके स्थान को ईमानदारी और कठिन परिश्रम ग्रहण करण पूँजीपति भी घन-शीतल का मोह छोड़ देंगे ।

‘आजादी को प्राप्त करने का मौलिक उद्देश्य गरीबी को दूर करना था ।

‘हमारे मोर्चों ने अगली आजादी का स्वाद नहीं लिखा है क्योंकि वे आजादी को मानव और वस्त्र के रूप में समझते हैं जो कि आज काफ़ी सादाव में नहीं ।

साम्यवादी संसार के लिए बास बन गये हैं ।

‘भारत की आर्थिक समस्या उत्पादन की समस्या पर आधारित है इसलिए यदि इसका कोई स्वामी हल निकालता है तो उत्पादन जाने बढ़ता होगा ।

‘जो लोग स्वयं कुचले गये हैं वे जानते हैं कि जबरदस्ती कुचले जाने में कितने कष्ट होते हैं इसलिए हमें हिंसा के मार्ग का अनुसरण नहीं करना चाहिए ।

‘मजदूरों की जनमर्या में एकता कायम रखनी चाहिए और उसमें भीतर तथा मजदूर जोकि मजूरी करता है जैसे विभाजन नहीं होने देने चाहिए ।

‘यदि धन अपने उद्देश्यों को पूरा करना चाहता है तो उसे मजबूत आधार पर खरना मोर्चा कायम करना चाहिए ।

‘सरकार मजदूर जनता की सेवा को नुबारना चाहती है लेकिन जब तक वे शराब पीने की आदत तथा उनकी उपस्थिति में बाधा देने वाली इन्हीं प्रकार की अन्य आदतों को नहीं छोड़ते तब तक निर्दोष मजूरी देने में कोई मतलब हम नहीं होना ।

‘आधुनिक औद्योगिक विकास ने हमारी पुरानी देहाती आर्थिक व्यवस्था विस्तृत क्षिप्त-मिश्र हो गई है । इस मौजूदा दुनियाँ में हम पीछे की ओर नजर डालना तथा अपनी पुरानी प्रथाओं में गिना ग्रहण करना नहीं भूलना चाहिए ।

आजादी ने हमारे राष्ट्रीय गौरव को बढ़ाया है ।

‘माँही जी ने हमें विकास का मार्ग बताया है, ज्ञानि का मार्ग नहीं जो कि हिंसा में जाकर समाप्त होता है ।

‘जब तक हम मजदूर वर्ग को रहन-सहन के अच्छे स्तर तथा सम्मान के स्थान का जो कि उनके लिए उपयुक्त है विश्वास नहीं दिया वेन तब तक हम सत्ताप के साथ नहीं बैठें रहेंगे ।

‘नाम कठिन और ईमानदारी का नाम नाम और निरन्तर अधिक से अधिक काम यही आज भारत माना की भाँव है ।

‘जो कि आवश्यक आर्थिक विकास के कार्यक्रम से बाधता है या अंततः अति व्यय करता है अथवा किसी और तरीके से उसमें बाधा डालता है—वह चाहे सरकारी कर्मचारी हो चाहे पूँजीपति और चाहे मजदूर—अब सामारण के मतानुसार वह बेचरोही है।

कानून अतिरिक्त मानवीय सम्बन्धों को व्यवस्थित करने के लिए बनाया जाता है। इसलिए उसका उपयोग इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए होना चाहिए कि उसके अपने किए।

‘यूनियादी महत्व के कारण आसन्न अन्तर्राष्ट्रीय व्यापारिक समझौतों में सीमा पटाने का एक जरिया बन गया है। इसलिए दूसरे देशों या इन सीमावाहियों पर निर्भर रहने में तथा साथ ही अधिक मुख्य होने से हम अपनी आर्थिक आजादी की जेब-जेन से कोई साम नहीं उठा सकेंगे।

‘जिस आन्तरिक शक्ति ने हरिजनो को सदियों तक सामाजिक अत्याचारों को सहन करने में समर्थ किया वही आन्तरिक शक्ति रोटी और धान के संघर्ष में उनकी सहायता करेगी।

‘मेरे कर्मकार संघों के स्वार्थपूर्ण नेतृत्व के सिद्धांत हैं क्योंकि वह पूँजीवाद के खिलाफ अपने स्वार्थ या पार्टी के उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कर्मकार तब पर नियन्त्रण रखता है।

‘अपने पूँजीवादियों के बिना भी काम चला सकता है किन्तु पूँजीवादी अम के बिना काम करने में असमर्थ है।

‘अपनी समस्याओं को सुझाने के लिए हड़ताल मजदूरों का अन्तिम हथियार है।

‘हरिजन समस्या अब सामाजिक समस्या नहीं रही अब वह पूर्ण रूप से आर्थिक समस्या बन गयी है। क्योंकि हमारी ज्यादातर आदिमी गरीब है। इसलिए हमारा सबसे अधिक ध्यान गरीबी को दूर करने की ओर है।

‘धर्म परिवर्तन की बात करना सर्वथा कायरान की विज्ञानी है, क्योंकि कायर वही भी जानता वही बुद्धिमान जानता है। इसलिए हम कायर नहीं बनना चाहते।

‘आम विचारों के साथ विचारों को ही लड़ना चाहिए।

‘नैतिक हथियार ऐसे व्यक्ति की रक्षा और उत्पत्ति करता है जिसकी रचना अमर शक्तियों का पुनर्निर्माण आवश्यक है। वह दूसरे के अधिकारों का आदर करना सिखाता है।

विभिन्न देशों में इस सिद्धान्त के बारे में फैमला हो चुका है कि अन्तिम सत्ता जनता के ही हाथ में है और इस जमाने में किसी भी ऐसी चीज को जिस कि जनता खुद पसन्द नहीं करती कोई भी ऊपर से उन पर जबरदस्ती नहीं कर सकता।

‘भारत में सबसे अधिक दोषित मानव समुदाय मजदूर वर्ग है। उन्हें सिर्फ पूंजापति ही दोषित नहीं कर रहे बल्कि कुछ एक ऐसे कर्मकार वर्ग भी हैं जो कि अपने मोचीपत नयेपन के कारण उन लोगों का दोषन कर रहे हैं।

आज के दुःख-बर्षों के लिए लोगों को ही दोष देना चाहिए। वे शोरवाजारियों घण्टाचारियों तथा दोषन करने वालों का जो कि नून जूसा करते हैं बहिष्कार करने के बजाय उनकी पूजा करते हैं और यहाँ तक कि वे उनके पास वार्षिक कामों के लिए पैसा माँगने भी आते हैं।

‘सर्वम हिन्दुओं को हरिजनों का ग्यायमन तथा उचित भाव उन्हें दे देना चाहिए। पारस्परिक विश्वास स्थापित करने तथा दोनों वर्गों को बीरे-बीरे एक करने के लिए सिर्फ एक यही रास्ता है।

‘मार्क्सवाद तथा बोबोबाव स्वभावतः एक जैसे ही हैं। दोनों के बीच सिर्फ साधनों का भेद है। मार्क्स जहाँ साम्यवाद को बाहर से लागू करने में विश्वास करते थे वहाँ महात्मा गांधी आन्तरिक विकास के जरिए उसी उद्देश्य की पूर्ति करना चाहते थे।

‘भारत सरकार अपने राज्य क्षेत्र में बाहर की किसी तरह की भी राजभक्ति को या भारत को विदेशी दलित के साथ एक सूत्र में बाँधने के लिए किए गए किसी प्रयत्न को सहन नहीं करेगी।

‘हम मिलों और कारखानों को जमाने के लिए सिर्फ माशिकों को ही नहीं बरतना चाहते हैं कि उन पर मजदूरों का नियन्त्रण हो।

‘महात्मा गांधी की शिक्षाएँ सर्वत्र के विकास सहकारिता हिमा के विकास अहिंसा युद्ध के सिमाक प्रेम तथा ऐसे मकीर्ष स्वान में जहाँ पापी या भी प्रवेश न हो मके मायता के विमाजन के विकास आतृण के स्थापन के सिद्धान्त पर आधारित थी।

महात्मा गांधी जैसा महात्मनस आन्तिचारी कभी भी पैदा नहीं हुआ। राम राज्य के बारे में हम जो कुछ पौराणिक भाषा में पढ़ सकते हैं उसमें नहीं अधिक महाराज्य उनक रामराज्य की कल्पना में है।

‘हमारे जीवनानों को अस्पष्ट तथा अस्पष्टनीय आदमों की छाया के पीछे नहीं आगता चाहिए बल्कि अपन पाम-गढ़ों के मुखारने में अपने को लमा देना चाहिए।

‘आर्थिक तथा सामाजिक व्यवस्था में इस प्रकार के नास्तिकारी परिवर्तन होने चाहिए कि जिससे मुट्ठी भर लोग मीठ न खा सकें जब कि लाखों लोग भूखे मर रहे हों ।

‘भूमि पट्टा प्रणाली के उत्पादकों के लिए जिनमें कि सबसे ज्यादा संख्या बोल मजदूरों की है किमी तरह का प्रकोपन नहीं क्योंकि उन्हें मालूम है कि उत्पादन बढ़ाने से उनके खुर का कोई लाभ नहीं उन्हें तो भिन्न निश्चित मजदूरी ही मिलेगी ।

‘जो लोग उत्पादन कर सकते हैं उनके पास काफी जमीन नहीं और जिनके पास काफी जमीन है उनके पास जरिया या प्रवृत्ति कुछ भी नहीं ।

धर्म के धारक को अवश्यमेव स्वीकार करना चाहिए । जो लोग अपनी मेहनत के जोर पर रहते हैं वे समाज के बड़े उपयोगी सदस्य हैं उन्हें उनका उपयोगी भाव अवश्य मिलना चाहिए । यदि भिक्षु राष्ट्र को विप्लव से बचाना है तो उनके हितों की अवश्य रक्षा होनी चाहिए ।

‘एक उच्च कुल का अफसर जो कि मजदूरों को निरुपेक्ष मानव समझता है उनकी कमी भी ठीक सेवा नहीं कर सकता ।

‘मैं इस बात को परवाह नहीं करता कि छात्र किस बाब का अनुसरण करते रहते हैं किन्तु क्या कोई ऐसा बाब है जो कि अनुशासन हीनता की बकायत करता हो । कोई भी ‘बाब’ लाइसेंस के लिए आजादी की व्यवस्था नहीं करता ।

बच्चपूजक आचीन करना माफसबाब का ही तरीका है । महात्मा गांधी की योजना में इसके लिए कोई स्थान नहीं ।

‘जब समाज अष्टाचार में रत लोगों को प्रोत्साहन दे रहा हो उस समय केवल सरकार से ही जोरबाजारी अष्टाचार तथा हमरी बुराइयों को हटाने की आशा करना बहुत बड़ी भ्रष्टाचार है ।

‘मैं किमी भी व्यक्ति को २४ घण्टे तक अपने को रंगी की स्थिति में रखने के लिए चुनौती देता हूँ । मुझे सम्येह नहीं कि उन अधिकांश के बाब ऐसा व्यक्ति हिन्दू-समाज को छोड़ना ही अधिक पसन्द करेगा ।

‘भारत के पूँजीपतियों ने लफा कमाने के सिवा और कुछ नहीं सीखा है ।

‘मजदूरों को हड़ताल करने का हक है । लेकिन इस अधिकार को सभी समय या बिना सोचे विचारे उपयोग में लाया उचित नहीं ।

‘जो आजादी आज हमारे पास है उसे हम जमकी आजादी नहीं कह सकते क्योंकि यह केवल राजनीतिक आजादी है । जनता के लिए यह कोई मायने नहीं रखती ।

तब तक कि उसके रहन-सहन के स्तर को ऊपर नहीं उठाया जाता उसकी गरीबी उचित भोजन वस्त्र तथा मकान की समस्याओं को हल नहीं किया जाता तब तक शोषण जग्याय तथा अत्याचार, चाहे किसी भी स्वरूप में हो भूतकाल की वस्तुएं नहीं बन जाते और तब तक कि उसे सब तरह की उन्नति के लिए सभी आवश्यक मकमर नहीं मिल जाते तब तक यह आजादी उसके लिए किसी काम की नहीं।

अब तक जो विधान बनाया गया है या बनाये जाने को है उसमें एक अल्प विराम तक को धन के लिलाफ़ मित्र नहीं किया जा सकता।

‘हमारा उद्देश्य ऐसे समाज का निर्माण करना है जहाँ कि मजदूर और मित्र मजदूर ही सारे उद्योगों के प्रबन्धक हों और जहाँ धन को पृथी के समान स्तर पर स्थापित किया जा सके।

‘भारत सरकार का धन-विधान एक दिन औद्योगिक जनतन्त्र में विकसित हो जाएगा।

‘हमारी नाट्य कार्यवाहियों में हमारी रहस्यमई करल बाका मिद्वान्त धन और प्रोत्साहन है न कि हिमा बुधा या भय।

‘भारतीय संस्कृति आदमी को सब बाधों से ऊपर रखती है और मानवीय व्यक्तित्व को सम्पूर्ण रूप में विकसित करने में विश्वास करती है।

‘जब तक कांग्रेसी लोग उद्योग तथा खेत में काम करने वाले लोगों तरह क मजदूर समुदाय के साथ अपने सम्बन्धों को फिर से स्थापित तथा मजबूत नहीं कर लेते तब तक वे लाख धमकी का मुकाबला करने में असफल रहेंगे और जीस बन्द करके इस में अराजकता को शक्तियों को ही केवल छूट देने में सफल होंगे।

‘मे ‘मैटिक पुनः प्रवृत्तिकरण में ही एने विरल के निर्माण का माय वेगता है जिसमें कि विचारपाठका के बीच दबावों विलकुल गप्ट हो गई हों।

अपने काय में स्वीत्य के सभी सुन्दर गुणों को लाने के लिए सभी तरह से स्त्री बने।

‘जातीयता का किना दूटा जा रहा है और वह गिरने ही जा रहा है। यह बात स्पष्ट हो जानी चाहिए कि मजदूर धनी की प्रवृत्ति का मकसद है कि कोई भी आदमी या काम नहीं करता समाज में स्थान नहीं पाएगा।

‘जितनी जल्दी हम रक्षा-कवचा को तैयार करने लगना ही हमारे लिए अच्छा है क्योंकि यह रक्षा-कवच हमें हमारी कमजोरियों की याद दिलाएगा है।

‘जब तक कि पूर्ण समानता के भाव प्रबल नहीं हो जाते तब तक देश की आजादी में सुरक्षा कठरे में रहेगी।

‘कोई भी सरकार धरातल काइनेस देने से प्राप्त होने वाले कर्मांकित राजस्व को हड़प्पा करने में दिकम्पत्ती नहीं रखेगी क्योंकि यह कोषों के खर्च को लपट करके एकत्र किया जाता है।

‘राजबन्दी का सबसे बड़ा काम यह है कि जन्मे अच्छा जाना जायेंगे अच्छे कपड़े पहनेंगे स्कूल जायेंगे तथा माता-पिता की ओर से उनकी उचित परवाह तथा देख-भाल होगी। उस भावी पीढ़ी के आकाश तथा जवाब विकास के लिए ये प्राथमिक अवस्थाएँ हैं जिसे कि विभिन्न परिवार तथा दूरी इद्दियों के सगड़ों व कपटों के भूत जग भी व्याप्त नहीं हाने।

‘मजदूर-जर्म की अवस्थाओं में काम्तिकाय परिस्थिति के लिए केवल विभाग की आवश्यकता नहीं बल्कि स्पष्ट रूप से कुछ और करने की भी आवश्यकता है और यह वह कि लोगों के मनोविज्ञान में परिवर्तन लाया जाये।

‘जो लोग अपने उद्देश्य की पूर्ति के लिए कुछ है और अपमान के जीवन से मृत्यु को अधिक पसन्द करते हैं वे जकर सफल होंगे। जो लोग अच्छे उद्देश्य के लिए लड़ रहे हैं उनके सामने दुनिया में कोई भी शक्ति बढ़ी नहीं रह सकती।

‘बसक मठाधिकार को ठीक ठीक से जमने में लाकर ही वह-वस्तु को मुक्ति प्राप्त हो सकती है मैं नहीं चाहता कि हरिजन रक्षा-कर्मियों का सहारा लेकर अपनी प्रवृत्ति के लिए योजना बनाएँ।

हरिजनों को अन्याय के मामले बटने न टिकने के लिए बड़ रहना चाहिए। ऐसा न कर अपने के लिए उन्हें कुछ भी कीमत चुकाना पड़े इसका परवाह नहीं। इसका मतलब यह नहीं कि वे उन लोगों के खिलाफ जो कि उन पर अन्याय करते हैं हिंसा का आशय में। उनमें बदला देने की भावना नहीं आनी चाहिए, किन्तु साब ही वे अन्याय के सामने सिर भी न झुकाएँ।

‘जबकि श्री मजबूती उनके सबसे कमजोर जोड़ पर ही निर्भर रहती है यदि जनता का कोई एक कमजोर रहता है तो समाज और राष्ट्र सम्पूर्ण रूप से मजबूत नहीं हो सकते।

‘अपि भारत एक बरीब देश है और उसकी छोटी ताकत भी नाम मात्र की है फिर भी उसमें संसार के ध्यान को जो अपनी ओर खींचा है उसका कारण है कि यही एक ऐसा देश है जिसने कि अहिंसा को अपनाया है और संसार को बताया है कि अच्छे उद्देश्य की पूर्ति अच्छे रास्ते से ही हो सकती है।

‘मैंसे तो यह सभी लोगों का कर्तव्य है लेकिन उन लोगों का विशेष कर्तव्य है जो कि अच्छी स्थिति में हैं कि वे उस विचार-धारा से सम्बन्ध स्थापित करने के लिए प्रत्येक प्रयत्न करें जो कि पूर्ण या पश्चिम कहीं से भी छन कर आई हो।

‘अपनी गई पाई हुई आबादी को सुरक्षित तथा दृढ़ करने एवं मातृभूमि को और अधिक उन्नत स्तर पर उठाने के लिए यह आवश्यक धर्म है कि अनिवार्य रूप से पश्चिम का निर्माण किया जाय, व आत्मानुशासन आत्म-संयम तथा विस्तृत दृष्टिकोण को आग्रह दिया जाये।

‘राष्ट्रीय-संस्कारों भावी अवसरस्त क्रांति के प्रत्यक्ष निशान व हमारे इतिहास के स्पष्ट सीमाचिह्न हैं।

‘रचनात्मक कार्यों में गांधी जी का वैचारिक महत्व देखते हुए, आज भी अपनी और अन्तराष्ट्रीय परिस्थितियों का विचार करते हुए कार्यक्रम बनाए जाते हैं।

‘पिछड़ी जातियों का एक सबसे बड़ा जितनी शक्ति के साथ अपनी जातियों की उत्पत्ति करने के लिए आर्थिक और सामाजिक व्यवस्था में परिवर्तन करना चाहता है वह शक्ति हमारी योजना में नहीं है। इस योजना में विपत्ति दूर नहीं हो सकेगी। यह बात सही है कि निर्धनता तो देश के और बरों में भी है। वह निर्धनता दूर होने पर पिछड़ी जातियों की दशा सुधरेगी लेकिन जो समुदाय सामाजिक आर्थिक सांस्कृतिक क्षेत्रों में पिछड़ा हुआ है उस पर जब तक विशेष ध्यान नहीं दिया जायगा दूसरे के मुकाबले में पीछे रह ही जायगा। पंचवर्षीय योजना में जितने पहलू से ध्यान देना चाहिए, नहीं दिया गया है।

‘गांधी जी समाज और सत्ता का बहुत दूर तक विकेन्द्रीकरण करना चाहते थे। मार्क्स ऐसा मानते थे कि शोषक वर्ग की प्रचलित व्यवस्था में सुधार सम्भव नहीं है। इसलिए शोषित वर्ग का संघटन करके समाज के सभी वर्गों को उनी वर्ग के हाथ में दे देना चाहिए।

‘सभी वर्गों की उत्पत्ति एक ही अनुपात में हो सबों के सुखी हो जाने के साथ ही समाज की असमानता रह नहीं जायगी।

‘गांधी और मार्क्स के मध्य में अंतर तो नहीं है लेकिन दोनों के मार्ग में मौलिक अंतर है। दोनों का हादिक प्रश्न एक ही था। गांधी जी वर्ग संघर्ष को बचाना चाहते थे शोषक वर्ग के हृदय को बदलना चाहते थे और शोषितों में आत्म-सम्मान तथा आत्म-निर्भरता भर कर उनकी मानसिक स्थिति को बदलना चाहते थे।

‘राष्ट्रीय संस्कृति में आज ने नहीं बहुत पहले से मिश्र-मिश्र वर्गों और



सम्प्रदायों की संस्कृतियों का एक सुन्दर सामंजस्य रहा है। अत्यन्त उदार भावना विदेशी संस्कृतियों को अपनाने में भारतीय संस्कृति बरतती रही है। यदि उन अल्प अल्प बाहरी संस्कृतियों को भारतीय संस्कृति से पुनर्क करने का प्रयत्न किया जाय तो भारतीय संस्कृति को आत्मा का हुनग करना होगा। क्योंकि भारतीय संस्कृति का मूलभार इसकी सात्वत आधुनिकता है। जब कभी इस सिद्धान्त को जोरल किया गया भारतीय संस्कृति ढापी समझी गई और समाज में विगृह्यता पाई गई। मैं यह भी मानता हूँ कि किसी देश की संस्कृति धर्म के ऊपर ही सत-प्रतिष्ठत नहीं निर्भर करती। एक ही देश में रहने वाले की संस्कृति एक-सी हो यह आवश्यक नहीं है। भाषा के कारण संस्कृति अलग हो जाय यह आवश्यक नहीं।

राष्ट्र भाषा हिन्दी तो होनी ही चाहिए। यदि एक भाषा हिन्दी का साम्राज्य हो जाय तो अच्छा है किन्तु यह सम्भव नहीं यदि हो भी तो कई सत्ताभिर्वादीत जायेंगी।

मेरे मन और हृदय पर गांधी जी मासमीव जी राजेन्द्र बाबू जवाहरलाल नेहरू का काफ़ी प्रभाव पड़ा है। मेरी माता जी के आत्म-संस्कार और उनकी उदात्त भावनाओं ने मुझे अपने बारे में सोचने समझने का अवसर दिया है।

‘मुझे भयवान में पूर्ण विश्वास है। उनकी कृपाशुता का आश्रय पकड़ने में अनिर्वर्णीय सुखों की प्राप्ति हुई है। जब जब कोई परेशानी आई है तन्हीं की कृपा से दूर हुई है।’

‘उन अमाने लोगों को जो सचियों से न केवल अछूत कहे जाते रहे हैं बल्कि जिनके साथ अछूतपन का व्यवहार किया जाता रहा हमारे संविधान ने कुछ अधिकारों की गारंटी दी है। उनकी कुछ सुविधाएं भी दी हैं। संविधान की मूर्तिका में ही स्वतंत्र दल और अवसर की समानता की गारंटी दी गई है। राष्ट्र के सामुदायिक जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में वे पिछड़े हुए हैं यह विचार करके उनकी कुछ मूलभूत अधिकारों की भी गारंटी दी गई है। वस्तुस्थिति का अन्त कर दिया गया है और धर्म प्रति नस्ल क्षिप्त या अल्पस्थानक कारण भेदभाव करने का निषेध कर दिया गया है।’

‘कानून बनाने और उसको जारी करने में तथा उसके अनुसार व्यवहार करने में सदा अन्तर हुआ करता है। मगर जब कानून का सम्बन्ध ऐसे लोगों के साथ हो जिनकी संस्था नपथ्य न हो तथा जो अपने अधिकारों के प्रति सजग हों तब उस पर अमल करने में देर लगाना खतरनाक होता है। परिणामित जातियों की संस्था ऐसी नहीं है जिसका कोई महत्व न हो। उनकी अन्तर्भेदता भाग उठो है। वे जिन व्योम्यताओं हीनताओं और धृमा क अधिकार रहे तथा जिनके भार के नीचे दबे हुए हैं उनसे मुक्त होने के लिए वे छटपटा रहे हैं।’

‘जेतिहर मजदूर की समस्या का वास्तविक समाधान तो भूमि-व्यवस्था में शान्तिकारी परिवर्तन करने पर ही होया । इस विषय में सभी एकमत है कि भूमि व्यवस्था इस संघ की होनी चाहिए जिसमें जोत जोगने वाले कान्तकार और राज्य के हमिदान कोई भी बलात्कृत न रहे और जमीन उन्ही लोगों के साथ बन्दोबस्त की जाय जो ‘असल में जोत जोतने वाले’ हैं । कठिनाई तो सब पटा होगी है जब यह तय करना पड़ता है कि ‘असल में जोत जोतने वाला’ कौन है ? प्रचलित चारबा के अनुसार कोई भी व्यक्ति ‘असली जोतने वाला’ जाल सिया जा सकता है जो अपने टबेट या मैनेजर द्वारा अपने से-दिये गये बीजानों से दात-अतिदात मजदूरों से ही जमीनी कर सफटा है । विषयपूर्ण भूमि-वितरण के प्रस्थाप के साथ म यह परिभाषा ही बड़े विरोध का कारण है । यदि ‘जमीन जोतने वाला’ का बही अर्थ माना जाय (जो कि बस्तुन-उमका अर्थ है) तो जमीन का पुन-वितरण बड़ा सरल हो जाय । विषयबाधो अधकनो और बीमारो को छोड़कर और कोई भी व्यक्ति जो चार्मिक या सामाजिक या आर्थिक कारणों से हल जोतना और जेती से सम्बन्धित अन्य किसी कार्य को स्वयं और अपन परिवार के सभी मीरोग और सक्षम व्यक्तिओं के साथ कम-से-कम मजदूरों की सहायता करने में अपनी हेठी समझता हो उस असली जोत जोतने वाला न मानना चाहिए । बड़ा मजदूर क्वाये भी जायें वहाँ जिस में या मकर मजदूरी देकर नहीं बन्धि मजदूर की बदलनवली पर ।

‘भूमि का पुनर्वितरण केवल जेतिहर मजदूरों की अवस्था सुधारने और ‘असल किसान’ की मासी हाकत ठीक करने के लिए ही जरूरी नहीं है बल्कि राष्ट्रीय हित में भी यह आवश्यक है । अनाज की पैदावार बढ़ाने की कोई आयोजना इच्छित फल न देवी जब तक किसान लत पर कुद मेहनत न करेगा । भाड़े के मजदूरों द्वारा जेती करानी और कुद लती करने के बीच भारी अन्तर है । और पैदावार पहले की अपेक्षा दूसरे में पाटह में बीस प्रतिशत तक अधिक होती है ।

‘किमान के मुद लती करन में पैदावार हमसा अधिक होती है । यह एक राष्ट्रीय समस्या है और हमको हल में उमी रूप में करना होगा । केवल जमीनदात अल करने तथा राज्य और विमान के बीच के लापा के हल बने भर म हृषि-अमस्या हल न हावी और न हृषि-अगान्ति दूर होगी । भूमि-व्यवस्था फिर में नये रूप में बनानी होगी और इसके लिए दृढ़ संकल्प और साहस में काम करना होगा चाहे निश्चि स्वार्थ बाकों वा जो कि अधिकतर बड़े विमान ह विरोध भी क्यों न मझना पड़ । इस समस्या का समाधान इसी संघ में है—‘जमीन जोतने वालों की । जोगन वाला कौन ?—जो हल जमाता है ।

आर्थिक नीति चाहे वह जमीन के सम्बन्ध में हो या उद्योग के बारे में हो ऐसी होनी चाहिए जो वर्तमान सामाजिक-आर्थिक ढांचे को बदल दे और संविधान के अन्तर्गामी निर्देशात्मक सिद्धांतों द्वारा बनाये गये को पूरा करने में सहायक हो। यह नीति केवल नहीं हो सकती है जो शोषण और विरोध का अन्त कर दे असमानता एवं विषमता को दूर कर दे, और जो उत्पादक श्रम और समाज-सेवा में लगे हुए सब लोगों में यह भावना उत्पन्न करे कि वे राष्ट्र की सेवा के लिए काम कर रहे हैं किसी व्यक्ति-विशेष के लिए नहीं जो समाज में उनको उचित बर्तन और प्रतिष्ठा दे जिससे वे अपने श्रम, धन और व्यवहार के बल पर अधिकारी हैं और जो उनको इस बात का विश्वास दिलाता कि वे अपने श्रम के फल में से उचित भाग अवश्य पायेंगे। यह उसी मन्त्रमंथन है जब लोगों के कल-कारणों और समाज-सेवा में श्रम करने वालों के प्रति समाज का विचार और दृष्टिकोण एवं मनोवृत्ति बदल जायें। वर्तमान सामाजिक-आर्थिक ढांचे का बदलने के लिए ठोस कार्रवाई करना और बड़ा काम उठाना निहामत जरूरी है।

परिणामित जातिवादी के लोगों के समाज द्वारा निर्धारित तथा कुछ परम्परागत वेधें हैं। अपना भाग तैयार करने के आधुनिक तरीके और ङग न जानने के कारण वे प्रतिद्वंद्विता में नहीं टिक सकते। उनका वेधा उनसे अधिक ज्ञान वाले बड़े हुए लोगों ने छीन लिया है और इन्हें बेकार बना दिया है। लेकिन इन पर लाये हुए सामाजिक बोझ को जिम्मेवारी की भी इनसे पूरा करवाया ही जाता है। वे अपनी इच्छा के विरुद्ध से काम करने को मजबूर किये जाते हैं। यदि वे इनको छोड़ दें तो उनको अनेक तरह से डराया भयकाया जाता है। यहाँ तक कि कुछ ब्राह्मणों ने भी उन व्यक्ति और हेम कामों को उनके द्वारा छोड़ देने के विरुद्ध फैसले किये हैं यद्यपि यह संविधान द्वारा दिये गये नागरिकता के अधिकारों के प्रतिकूल है। धर्म और नीति रखने के बावजूद वैयक्तिक स्वतन्त्रता पर किये गये ऐसे हमलों की वे बेचारे नहीं रोक सकते क्योंकि इनके पास धन नहीं है जिससे वे सुप्रीम कोर्ट में जाकर उसके विरुद्ध लड़ें।

विद्या की दृष्टि से परिणामित जातिवादी बहुत पिछड़ी हुई है। यदि उनका खून सहन और जीवन-मान उँचा करना है तो यह जरूरी है कि इस विद्या में उनकी आवश्यक सुविधायें ही जायें। गरीबी और सामाजिक परिस्थितियों के कारण उनके लिए अपने शब्दों को सिखा देना सम्भव नहीं।

गरीब हरिजन छात्र उन्हें अधिकारियों नेपास कहीं तक बीछ चुप और वेंचरी कर सकते हैं। हरिजन भी आगे बढ़ गये इसके लिए यह जरूरी है कि सभी सरकारों (केन्द्रीय और राज्य) के बजटों के अन्तर्ग परिणामित जातिवादी के छात्रों को सभी

प्रचार की सिखा देने के लिए उपायोंपुल व्यवस्था होनी चाहिए। निम्नो भी बहाने से उनके शक्तिसे को नहीं रोकना चाहिए। जहाँ जरूरी हो उनके लिए स्कूल कालिजों में स्वात सुरक्षित रखने चाहिए। होस्टल उनके लिए बहाने चाहिए। लेकिन सच सिद्धा को उत्साहित करना चाहिए जिससे धिंसित हो जाने पर उनमें बरोजगारी और बकारी न पैदा।

‘यदि हरिजनों छिस्वियों बेहस्तों के और गरीब लोगों के मकानों के स्वात की समस्या का हल कर दिया जाय तो बेगारी लगे की बारबाने भी बहुत कम हो जायँ। आज हमारा ध्यान सड़कों की गन्दी बस्तियों की ओर गया है लेकिन बहुत कम लोग यह जानते हैं कि हमारे अधिकतर गांवों में जहाँ हरिजनों की बस्ती होती है वह शिम्मा सहरा की गन्दी बस्तियों से कहीं अधिक गया गुबरा होता है।

‘हरिजनों के और अन्य भूमिहीन वर्गों के घर बेहानों में जिन जमीन पर बने हुए हैं उन जमीनों पर उनका शक्तिशाली हक हो जाना चाहिए। कानून के द्वारा इसकी व्यवस्था की जा होनी चाहिए। मद्रास सरकार ने एक योजना स्वीकृत की है जिसके द्वारा शक्ति वर्ग को मकान बनाने के लिए जमीन मुफ्त दी जायगी। प्रत्येक परिवार को पानी वाली जमीन में ३ मैट्स (करीब १५० वर्ग गज) और सूखी जमीन में ५ मैट्स (करीब २५० वर्ग गज) दिया जाता है। मार्च १९५५ के अन्त तक लगभग ४९,००० परिवारों को घर बनाने के लिए जगह दी गई। मैसूर सरकार ने भी इसी प्रकार की कार्रवाई की है। अन्य प्रदेशों की सरकारों को भी ऐसा प्रयत्न जल्द करना चाहिए।

‘परिवर्तित जातियों के अन्दर एक हल ऐसा भी है जो मानता है कि उनकी वर्तमान शोचनीय हालत का मूल कारण उनका हिन्दू धर्म में होना ही है। उनका स्वात है कि ज्यों ही वे हिन्दू धर्म एवं समाज के घेरे से निकल जायेंगे त्योंही वे अछूत न रहेंगे एवं उनकी सामाजिक और आर्थिक अवस्थाएँ ठीक हो जायगी। इस विचार का मेने कभी समर्थन नहीं किया और परिवर्तित जातियों द्वारा सामूहिक धर्म-परिवर्तन के विचार का खरा प्रतिरोध किया है। भारतीय दलित जातीय धर्म की नीति भी यही रही है। यदि किसी आदमी को यह विश्वास हो जाता है कि वह जिस धर्म को स्वीकार करने वाला है वह उसके जन्म के धर्म से भेद है और वह यदि अन्य विश्वास से धर्म परिवर्तन करता है तो ऐसे धर्म-परिवर्तन के विरोध करने का कोई कारण नहीं। सामूहिक धर्म-परिवर्तन के मामले में यह मिडाल लागू नहीं होना और इस प्रकार के सामूहिक धर्म-परिवर्तन की भावना का गन्ग और सर्वथा विरोध करना चाहिए।

‘लौकिक लाभ के लिए जलवा नटिगाइयों से छुटकारा पाने के लिए धर्म-परि

वर्तन को कमजोरी और कायरता का चिह्न माना जाता है। मे आज भी ऐसा मानता हूँ कि हिन्दू धर्म के सच्चे स्वरूप के ऊपर बिठने कस्मुपित आवरण बढ़ा दिने मने हैं उनको हटाकर हिन्दू धर्म का सुचारु करके उसको अपने बीरवपुर्न स्थापन पर स्थापित किया जा सकता है। धर्मव्यवस्था और जाति-पाति का बन्धी से बन्धी अन्त होना चाहिए। ऐसी बातों में राज्य की सहायता कानून की मदद सहा जाय न करनी होती है। मे उन लोगों से सहमत नहीं हूँ जो यह करते हैं कि सामाजिक सुधार के क्षेत्र में सरकार को हस्तक्षेप न करना चाहिए। समाज के अन्दर जीवन के नैतिक मानकों को ऊँचा रखने और समाज सुधार के कार्यों में सहा राज्य ने हस्तक्षेप किया है और राजदण्ड करता है। किसी भी स्मृति को बेज कीविए, उसमें आपको इसके बहुत प्रमाण मिल जायेंगे। जातिवादी और वर्गों को मिटाने में सरकार को ठोस कदम उठाना चाहिए। जाति प्रथा को मिटाने के लिए हमें तो कब्र कद कर बिहार बोक ही बना है।

आज अपने माय में आई सब रकावटों और बाधाओं को दूर करने में परिपक्व जातिवादी भले ही समर्थ न हों किन्तु उनकी यह असहाय अवस्था बहुत बेर तक या हमेशा न रहेगी। इरेक बीज की एक सीमा है हब है। जब किसी आदमी के बीरव पर बहुत मार बाका जाता है तो वह बधीर हो जाता है और प्रायः निराश हो जाता है। निराशा में आदमी कुछ भी कर सकता है। 'मरता क्या न करता' इसे नहीं भूखना चाहिए।

'न माकूम' किन् धर्मशास्त्र या आचार शास्त्र के अनुमोदन से इन वर्गों के साथ यह अमानुषिक कर्तव्य किया जाता है। सदियों से उनकी उपेक्षा की जा रही है। मे निराशावादी नहीं हूँ। आज भी मे यह निराशा करता हूँ कि इस विशाल देश के प्रत्येक भाग में इन लोगों के साथ न्यायपूर्ण व्यवहार किया जायगा और समाज इस स्थिति को सुधारने का हर तरह से प्रयत्न करेगा।

'सरकार ने देश के सामने आई अनेक कठिनाइयों और समस्याओं का संफुल्लता पूर्वक सामना किया है। नवीन भारत के निर्माण का यही आधार है कि नर-नारी के बीच कोई भेद न रहे। वर्गहीन समाज की स्थापना हो जिससे जाति धर्म और विश्वास के अंधाधुंध का विचार किये बिना प्रत्येक व्यक्ति को अपनी उन्नति के लिए समान अवसर मिले। ब सभी वर्गों के रहन-सहन सुख-सुविधा एवं जीवन-मान में सरकारी

हो। इन समय तक पहुँचने के प्रयत्न में परिगणित जातियों और अल्प स्थापित वर्गों के प्रतिनिधियों का विद्यमान उत्तरागमिक है।

मेरा दुःख निश्वास है कि वह समय दूर नहीं जब दमित और शोषित जातियों के लोग भी सभी क्षेत्रों में दूसरों के बराबर बन जायेंगे तथा वे बरा बरी आर्थिक और नैतिक समृद्धि को बढ़ाने में अपना अंशदान बन में हिस्सा से पीछे न रहेंगे।